



हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

सं. 138

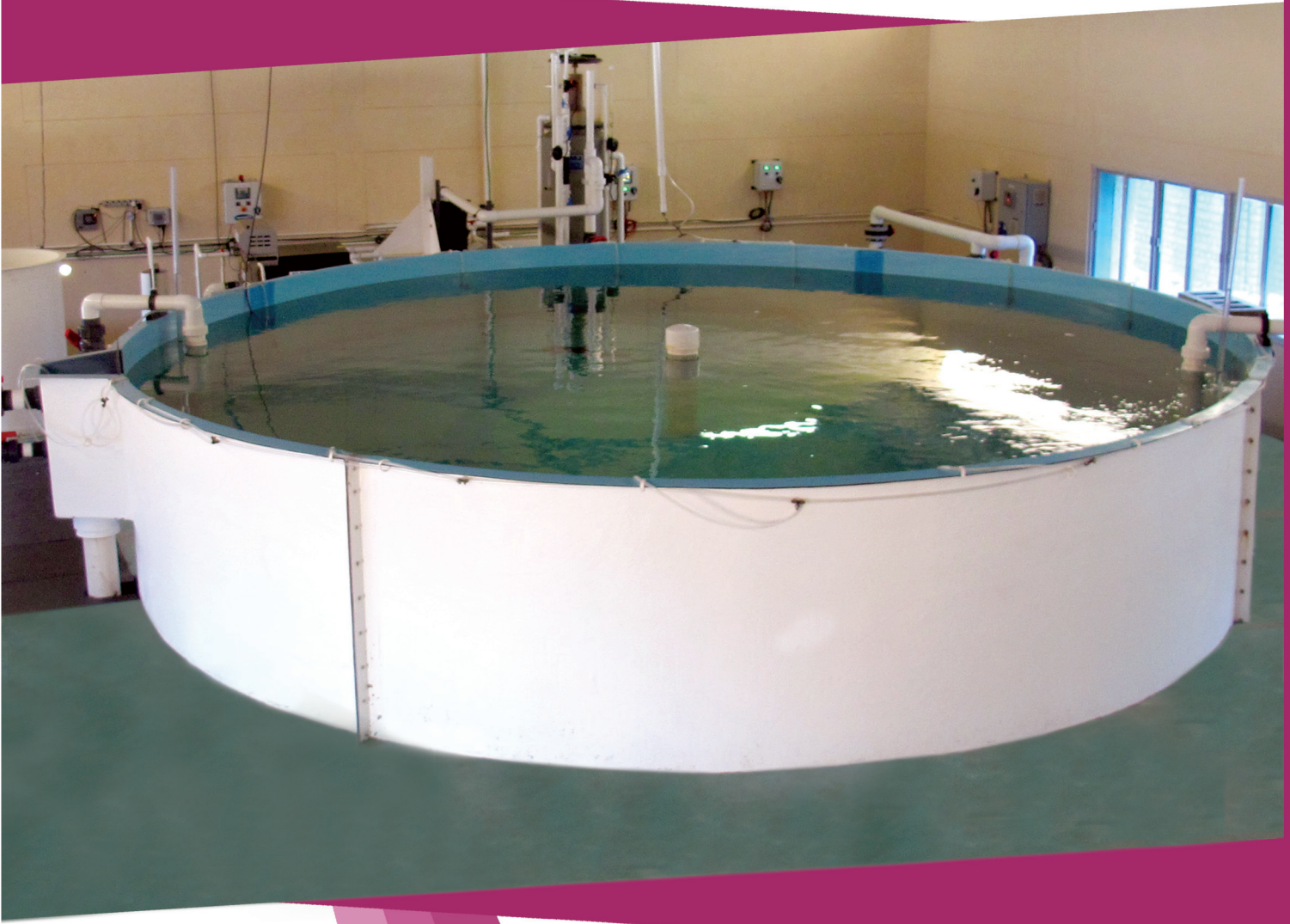
अगस्त-सितंबर 2013

ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

<http://www.cmfri.org.in>



मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में आर ए एस सुविधा



केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान

पी.बी.सं. 1603, एरणाकुलम नोर्ट पी.ओ., कोचीन - 682 018

कडलमीन

കടൽമീൻ

கடல்மீன்

கடல்மீன்

കടൽമീൻ

കടൽമീൻ

कडलमीन

കടൽമീൻ

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की पुनःसंचलन जलकृषि व्यवस्था में कोबिया मछली का प्रथम सफलतापूर्ण अंडजनन	3
मुम्बई में स्टिंग रे और बक्स जेली फिश का आक्रमण	5
अनुसंधान मुख्य अंश	7
प्रशिक्षण कार्यक्रम	11
घटनाएं	13
आगामी घटनाएं	15
प्रमुख व्यक्तियों का मुआइना	16
राजभाषा कार्यान्वयन	17
मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ	18
कृ वि कें (एरणाकुलम) के समाचार	19
कार्यक्रम में सहभागिता	20
कार्मिक समाचार	22

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन

निदेशक

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बॉक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्ट पी.ओ
कोचीन - 682 018, केरल, भारत

दूरभाष : 0484-2394867

फैक्स: 91-484-2394909

ई-मेल: director@cmfri.org.in

वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादकीय मंडल

डॉ. आर. नारायणकुमार, अध्यक्ष

डॉ. सी. रामचन्द्रन

डॉ. आर. जयभास्करन

डॉ. काजल चक्रवर्ती

संपादक

वी. एड्विन जोसफ

सचिवीय सहायता

वी.के. सुरेश

पी. आर. अभिलाष

हिंदी अनुवाद

ई. के. उमा

निदेशक कहते हैं



प्रिय सहकर्मियो,

वर्ष के पिछले दो महीने संस्थान और पूरे समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर घटनाओं से युक्त है। भारी मानसून और पूरे तटीय राज्यों में लागू किए गए आनाय रोध की वजह से मात्स्यिकी सक्रिय रूप से पुनःस्थापित हुई थी। सारे समुद्रवर्ती राज्यों में सक्रिय प्रग्रहण मात्स्यिकी और कुछ स्थानों में असाधारण आकलनों और असाधारण अवतरणों की रिपोर्ट प्राप्त हुई

है। वर्ष 2012 के अखिल भारतीय मछली अवतरण आकलनों, जो कच्छ के आंकड़ा सहित है, का अंतिम रूप दिया गया। नया मत्स्यन पोत, एफ.वी.सिल्वर पोम्पानो ने इसका पहला समुद्री पर्यटन पूरा किया और वर्तमान अध्ययन में और अधिक आंकड़े जोड़ते हुए समुद्री मात्स्यिकी पर जलवायु लचीला अनुसंधान अत्यंत स्पष्ट और व्यक्त हो जाएगा। मोलस्कन प्रग्रहण मात्स्यिकी में हमारे प्रयासों के संकेत के रूप में भारत की अष्टमुडी नदीमुख की सीपी मात्स्यिकी को माराइन स्टिवाडशिप काउन्सिल का निर्धारण प्राप्त हुआ।

समुद्री संवर्धन अनुसंधान के क्षेत्र में, सिल्वर पोम्पानो मछली के 5-6.5 से.मी. के आकार के उंगलिमीनों को प्रति टैंक में 2000 मीनों की सांद्रता के टैंकों में मंडपम से पेड़डा के संभरण बेड़ाओं तक 1250 किलोमीटर की दूरी में 28 घंटे परिवहन करने में सफलता पायी गयी। नए रूप से विकसित पुनःपरिसंचरण व्यवस्था के अंदर कोबिया मछली में 86.1% निषेचन और 86.7% स्फुटन प्राप्त किया जा सका। सी एम एफ आर आइ ने एन ए आइ पी द्वारा सीपी पालन करने वाले किसानों की सहायता प्रदान की गयी और पिछले महीने में मूतकुन्नम क्षेत्र में किए गए पुरस्कार समारोह से, तटीय मछुआरों के बीच दैनिक आजीविका की गतिविधियों में समुद्री संवर्धन कार्य जुड़ाने की अभिरुचि का संकेत मिला। समुद्री संवर्धन की शक्यता का, प्रतिवर्ष समुद्री संवर्धन द्वारा 4 टन समुद्री मछली का उत्पादन करने की हमारी विशन के अनुरूप शोषण किया जाना चाहिए।

अंत में, निदेशक के रूप में मैं आप से यह अनुरोध करना चाहता हूँ कि देश की समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान में नए मान प्राप्त होने के लिए प्रयास करें। गरीब और संवेदनशील तटीय मछुआरों के लिए हम एक साथ काम करें और तद्वारा देश में हमेशा मछली खाद्य की समृद्धि हो जाए।

नमस्ते

डॉ. ए.गोपालकृष्णन
निदेशक

सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम केंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

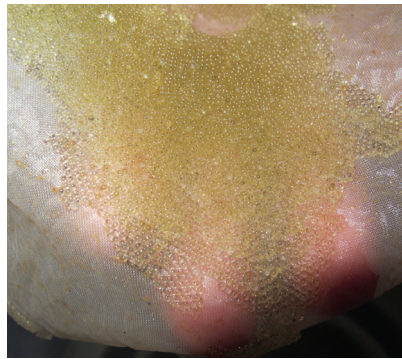


मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में स्थापित पुनःपरिसंचरण जलकृषि व्यवस्था में कोबिया मछली का पहली बार सफलतापूर्ण अंडजनन

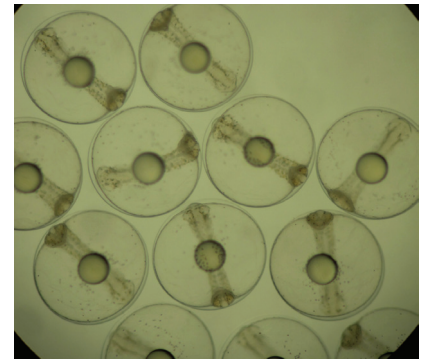


मंडपम की आर ए एस सुविधा का दृश्य

मंडपम में स्थापित पुनःपरिसंचरण जलकृषि व्यवस्था (आर ए एस) में दिनांक 20 सितंबर 2013 को कोबिया मछली (*राचिसेन्ट्रोन कनाडम*) का सफलतापूर्ण अंडजनन किया जा सका। महा निदेशक, भा कृ अनु प ने मई 2013 महीने में आर ए एस सुविधा का उद्घाटन किया और तब से लेकर कोबिया अंडशावकों का अनुरक्षण करने के लिए यह उपयुक्त की जाती है। इस व्यवस्था में ब्रूडर मछली को अवस्थापित और अच्छी स्वास्थ्य की स्थिति में रखा जा सका। इस व्यवस्था में एक मादा और दो नर ब्रूडर मछलियों को स्टॉक किया गया। कैनुलेशन द्वारा अंड के आकार का आकलन किया गया और इसके अनुसार दिनांक 18 सितंबर 2013 को ब्रूडर मछलियों को एच सी जी से उत्प्रेरित किया गया। कुल 2.40 मिलियन अंडों का जन्म



कोबिया मछली के निषेचित अंड

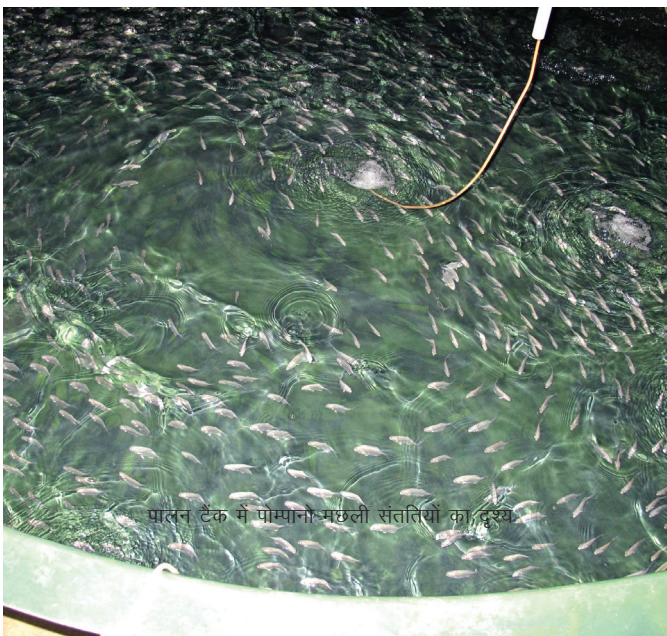


कोबिया मछली के विकासशील अंड

दिया और निषेचन का प्रतिशत 86.1 था। तापमान का परास 27.5-29°C था। दिनांक 20 सितंबर 2013 शाम को स्फुटन शुरू होकर 21 सितंबर 2013 बड़े सुबह को

समाप्त हुआ। कुल 1.80 मिलियन डिंभकों का स्फुटन हो गया और स्फुटन का प्रतिशत 86.7 था। डिंभकों को डिंभक पालन टैंकों में विभिन्न सांद्रता में संभरित किया गया।

मंडपम में सिल्वर पोम्पानो के उंगलिमीनों के उत्पादन में बढ़ावा और पालन के लिए आंध्रा प्रदेश तक भारी पैमाने में संततियों का परिवहन



पालन टैंक में पोम्पानो मछली संततियों का दृश्य

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान वर्ष 2008 से लेकर जलकृषि में अनुसंधान आयोजित कर रहे हैं। भारत में पहली बार सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में जुलाई 2011 के दौरान पहली बार सिल्वर पोम्पानो मछली के प्रेरित प्रजनन और डिंभक पालन सफल रूप से किया गया। इसके बाद ग्यारह बार संतति उत्पादन सफल रूप से किया गया और अतिजीवितता दर भी बढ़ गयी। यह नोट कर लिया गया कि

डिंभक पालन टैंकों के जीवंत खाद्य डिंभकों की अतिजीवितता में मुख्य भूमिका निभाते हैं विशेषतः रोटिफर के संदर्भ में। रोटिफर की सांद्रता प्रति मिली लिटर में 25-30 होने पर अच्छा परिणाम निकल जाएगा। फिर भी, डिंभक पालन टैंक में डिंभकों की संभरण सघनता जीवंत खाद्य की सघनता पर संबंधित है। यह भी नोट कर लिया गया है कि उत्कृष्ट अतिजीवितता दर प्राप्त करने के लिए प्रति लिटर पानी में 5 डिंभकों और प्रति मिली लिटर पानी में 25 रोटिफर की सघनता स्वीकार्य है। इस पालन प्रणाली से प्राप्त अधिकतम अतिजीवितता दर 23.4% है। वर्ष 2011 में सी एम एफ आर आइ मंडपम

क्षेत्रीय केंद्र से आंध्र प्रदेश के ईस्ट गोदावरी जिला में अंदरवेदी के एक मछुआरे के एक एकड़ क्षेत्रफल के तालाब तक करीब 1,200 कि.मी. की दूरी में पोम्पानो मछलियों का परिवहन करके पहली बार पालन परीक्षण शुरू किया गया। तालाब में लगभग 3,600 मछली संततियों का संभरण करके खाने के लिए देशीय पेल्लेट आहार देने और तालाब में अनुयोज्य वातावरण सजाने पर 95% से अधिक अतिजीवितता पायी गयी। रूपाइत पेल्लेट खाद्य की लागत प्रति किलोग्राम के लिए 35/- रु. है। इस फसल में पाया गया खाद्य परिवर्तन अनुपात 1:1.8 है। पालन अवधि के 8 महीनों के दौरान मछलियाँ 450-550 ग्राम के आकार तक बढ़ गयीं, जो विपणन के लिए अनुयोज्य आकार है। लगभग 8 महीनों के पालन के बाद 1,325 कि.ग्राम पोम्पानो मछलियों का फसल संग्रहण किया गया। इनका विपणन मूल्य 250/ कि.ग्रा. और 350/ कि. ग्रा. के बीच में था।

पोम्पानो मछली के सफलतापूर्वक पालन निदर्शन के उपरान्त आंध्र प्रदेश में पोम्पानो मछली संततियों की मांग बढ़ गयी। वर्ष 2013-14 के दौरान मंडपम केंद्र में

पोम्पानो मछली के एक लाख से अधिक संततियों का उत्पादन किया और तमिल नाडु, केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के मछुआरों को पूर्ति की गयी। सब से पहली बार मछली संततियों का भारी परिवहन दिनांक 05.09.2013 को ऑक्सिजन सिलिन्डर लगाए गए 1.0 टन की सघनता वाले टैंकों (10 संख्या) में ऑक्सिजन सिलिन्डर लगाकर ट्रक में किया गया। हर एक टैंक में पोम्पानो मछली के 5000 संततियों को संभरित किया गया। उंगलिमीनों की लंबाई 2.5 से 4.9 से.मी. (माध्य 4.2 से.मी.) और भार का परास 0.25 - 1.14 ग्राम (माध्य 0.85 ग्राम) था। तापमान घटाने के लिए हर एक टैंक में बर्फ की थैलियाँ रखी थीं। इन मछली संततियों को तमिल नाडु के मंडपम से रोड के मार्ग से 29 घंटे की दूरी पार करके आंध्र प्रदेश के वेस्ट गोदावरी जिला के दिलसुमारु और तुरपुताडु गाँवों तक ले गया। इन मछली संततियों को मर्त्यता के बिना पालन स्थान में पहुँचाया जा सका और पालन तालाब में स्थापित बाड़ों में स्टॉक किया गया। जल्दी ही वे लवणता और तापमान के अनुकूल बन गए। इनको खाने के लिए रूपाइत आहार दिया और पालन स्थितियों



पोम्पानो मछलियों का दृश्य



पोम्पानो मछली संततियों को मछुआरों को प्रदान करने का दृश्य

के साथ जल्दी ही अनुकूल बन गए।

(जी.गोपकुमार, ए.के.अब्दुल नासर, पी.जयकुमार, जी.तमिलमणी, सी.कालिदास, पी.रमेश कुमार और जोनसन बी., मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

देश के विभिन्न भागों तक कोबिया और पोम्पानो मछली के उंगलिमीनों का परिवहन

आंध्र प्रदेश में भारी पैमाने में उंगलिमीनों का परिवहन करने के बाद सिल्वर पोम्पानो मछली के कुल 42,380 और कोबिया मछली के कुल 7,650 उंगलिमीनों को जुलाई से सितंबर 2013 की अवधि के दौरान तमिल नाडु, केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के विभिन्न प्रकार के मछुआरों और उद्यमियों को पालन करने के लिए वितरण किया गया।



पोम्पानो मछली संततियों का दृश्य



कोबिया मछली संततियों के पैकेट



कोबिया और पोम्पानो मछली संततियों का पैकिंग करने का दृश्य



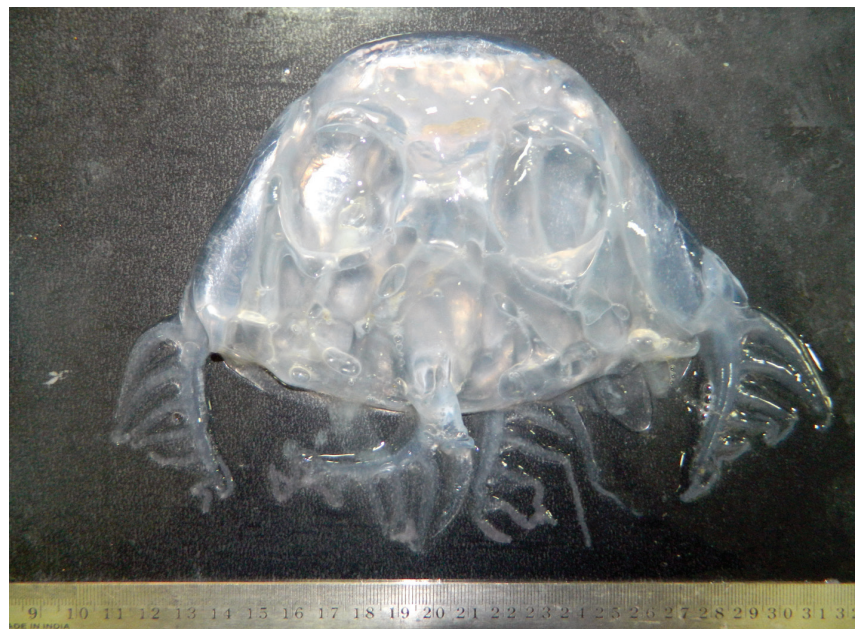
स्टिंग रे

मुम्बई में भगवान गणेश के निमज्जन के दूसरे दिन याने कि 10 सितंबर, 2013 को गिरगाँव चौपाती पुलिन में, जब भक्त लोग घुटनों की गहराई के पानी में जाते वक्त बोकस जेली फिश, स्टिंग रे और अन्य आपत्तिकारी मछलियों के आक्रमण से चोट लगी। इस से भक्त लोगों के बीच हलचल होने लगा क्योंकि करीब 65 लोगों को जेली फिश और स्टिंग रे के काटने से चोट लगी। इनको पैर की चोट में जलन और तेज़ दर्द हुआ, जिसकी वजह से उन्हें नगरपालिका आस्पतालों में भर्ती कराया गया। शाम को मीडिया द्वारा इस घटना का व्यापक प्रचार दिया गया और भक्त लोग और भी डर गए। तुरंत ही नगरपालिका और सरकार ने इस घटना पर तुरंत जांच करने का आदेश दिया।

सी एम एफ आर आइ की विशेषज्ञता पर जानते हुए महाराष्ट्र राज्य मात्स्यिकी विभाग के आयुक्त ने पुलिन और निकट समुद्र का सर्वेक्षण करने के लिए प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केंद्र से संपर्क किया। इसके अनुसार सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों ने दिनांक 11-09-2013 बड़े सबेरे को तट संपाश (ड्रैग नेट या येन्डी जाल और मराठी में पेरा जाल) और मत्स्यन जाल उपयुक्त करके पुलिन और तटीय समुद्र का अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण से इस पुलिन के उथले जल में स्टिंग रे, बोकस जेली फिश और ईल की उपस्थिति व्यक्त हो गयी। माननीय मुख्य मंत्री श्री पृथ्विराज चवान ने भक्त लोगों को

परेशान देने और आस्पताल में भर्ती कराने का कारण बन गए इन जीवों पर सूचना देने के लिए डॉ. वी.डी.देशमुख के नेतृत्व के सी एम एफ आर आइ टीम को बुलाया। उन्होंने इन आक्रमणकारी जीवों पर अत्यंत अभिरुचि प्रकट की और दिनांक 13-09-2013 और 18-09-2013 को (भगवान गणेश के निमज्जन के 5वां और 10वां दिन) लोगों को आवश्यक चेतावनी देने के लिए अभितट और तट के निकट भागों में एक बार फिर सर्वेक्षण करने का अनुदेश दिया।

इसी प्रकार 13 और 18 सितंबर 2013



जेली फिश

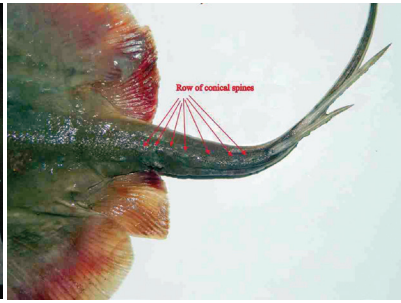
मुम्बई में स्टिंग रे और बोकस जेली फिश का आक्रमण

को 3 टीमों द्वारा 0700 और 1200 घंटे सर्वेक्षण किया गया। इसी तरह किए गए सर्वेक्षणों में साधारण मछलियाँ जैसे सोल, ऐंचोवी, मुल्लन, झींगा और बम्बिलों को प्राप्त हुआ और सर्वेक्षण के दोनों दिन तटीय समुद्र के जल में आक्रमणकारी जीवों को नहीं दिखाया पड़ा। मत्स्यन परिचालन और पुलिन के सर्वेक्षण के दौरान जेली फिश या स्टिंग रे को नहीं पाया गया।

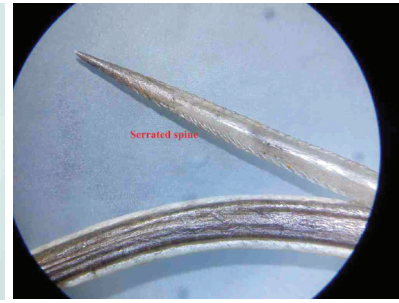
फिर भी, गिरगाँव चौपाती के पुलिन में दिनांक 18-09-2013 को किए गए सर्वेक्षण के दौरान किए गए तीन तट संपाश परिचालन में 1-1.5 मीटर की गहराई से स्टिंग रे के 12 शिशुओं की उपस्थिति दिखायी पड़ी। समान गहराई का अनुमान करते हुए यह आकलन किया गया कि लगभग 3.1 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्रफल होने वाले चौपाती उपसागर में करीब 6000 स्टिंग रे थे। इनके स्टिंग समुद्र में प्रवेश करने



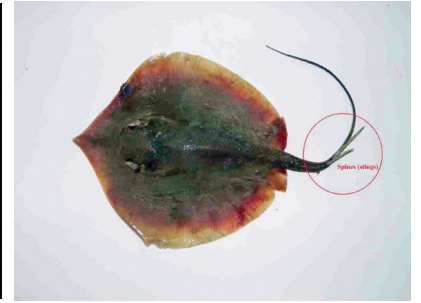
तटसंपाश सर्वेक्षण में पकड़े गए जीव



स्टिंग रे में कोनाकार कांटों की पंक्ति



सेरेटड स्पाइन



स्टिंग रे

वाले भक्त लोगों के लिए खतरनाक होंगे, अतः सी एम एफ आर आइ की रिपोर्ट के आधार पर मुनिसिपल कमीशनर ने जनता और भक्तों को निमज्जन के लिए घुटनों की गहराई के पानी में प्रवेश करने से स्टिंग रे की काट होने की चेतावनी दी।

स्टिंग रे को हिमान्तूरा इम्ब्रिकेटा और ईल को जिम्नोटोराक्स जाति नाम से जाना जाता है। सारे स्टिंग रे नए जन्म हुए थे जिनका आकार परास 75-140 मि.मी. का डिस्क व्यास था। शायद ये आहार लेने के लिए तटीय समुद्र पर आए होंगे। लेकिन उथले जल में बड़ी संख्या

में इन तलमज्जी मछलियों के किशोरों की उपस्थिति महाराष्ट्र समुद्र में सितंबर महीने में ओक्सिजन का न्यूनतम स्तर ऊँचा होने के कारण होगा और वहाँ के स्थलाकृतिक ज्वार से ये उपसागर में ही इकट्ठा हुए होंगे। किशोर या नए जन्म हुए शिशु होने पर भी इनके कंटक या स्टिंग कड़ा घाव या चोट लगाने लायक शक्त होंगे।

बोक्स जेली फिश कैरोप्सोइडस ब्यूटेन्डिजकी नाम से जाना जाता है। यह कैरोनेक्स फ्लीकेरी, जो कार्डियो-टोक्सिक है, की तरह खतरनाक न होने पर भी इसके स्पर्श-सूत्र

(टेन्टकिल) पर नेमटोसाइट्स हैं, जो न्यूरोटोक्सिन उत्पादित करते हैं। इस न्यूरो-टोक्सिन की वजह से खुजली और जलन होता है और शिकार ग्रस्त लोगों को चूना और एन्टी-हिस्टामिन का टीका लगाया जाता है। सितंबर 10वां तारीख को वातावरण का तापमान बहुत ऊँचा था, इसलिए समुद्री सतह का तापमान भी बढ़ गया होगा, जिस के परिणामस्वरूप जेली फिश उपसागर क्षेत्र में इकट्ठा हुआ होगा। लेकिन बारिश की वजह से समुद्री सतह जल्दी ठंड होने से जेलीफिश चारों ओर के उथले जल में फैले हुए और लागों के बीच हलचल मचाया।

(वी.डी.देशमुख, मुम्बई अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

विषिजम तट पर स्क्विडों का भारी अवतरण



विषिजम अवतरण केंद्र में दिनांक 18-20 सितंबर, 2013 के दौरान स्क्विडों और कटिल फिशों का बड़े पैमाने में अवतरण हुआ। औसत 250 एककों में बोटसंपाशों का परिचालन करने पर प्रति दिन प्रति नाव से लगभग 750 से 1500 कि.ग्रा. स्क्विड प्राप्त हुए। तीन दिनों की कुल आकलित पकड़ 750 टन थी। स्क्विडों में सब से अधिक याने कि 95% लोलिगो डुवासेली और बाकि एल. सिगालेन्सिस थे। औसत मूल्य प्रति किलोग्राम के लिए 140 और 180 रुपए के बीच था।

विषिजम में स्क्विडों के भारी अवतरण का दृश्य

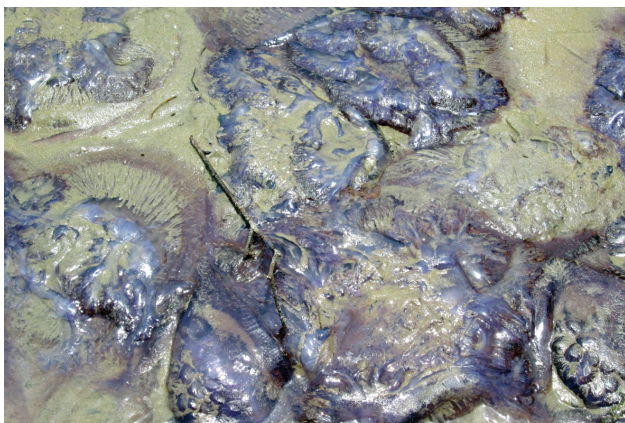
विषिजम तट की ओर जेली फिश का बड़े पैमाने में अधिक्रमण

विषिजम तट के निकटस्थ समुद्र के पानी के रंग में बदलाव दिखाए पड़ने पर विस्तृत जांच और आकलन किए गए। पानी के नमूने का परीक्षण करने पर यह व्यक्त हो गया कि पी एच का परास 7.5 और 7.9 के बीच और

औसत विलीन ऑक्सिजन 4.8 से 5.09 मि. ग्रा./लिटर थे। भारी अतिक्रमण हुए दिनांक 26 अगस्त 2013 को पानी में CO₂ की मात्रा अधिक थी। तटीय भागों में कई जेली फिशों को मृत अवस्था में दिखाया पड़ा। दिनांक 23

अगस्त 2013 को 100 वर्ग मीटर के क्षेत्र में करीब 94 जेली फिशों को और अगला दिन इस से भी ज्यादा याने कि अगणनीय मात्रा में दिखाया पड़ा।

(विषिजम अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)



जेली फिश मृत अवस्था में



वायलट जेली फिश का निकट दृश्य

पाक उपसागर में ड्यूगोंग आवासों के लिए जलांदर सर्वेक्षण

ड्यूगोंग (ड्यूगोंग ड्यूगोन) समुद्र में रहनेवाला एकमात्र शाकाहारी स्तनी है, जो जीविका के लिए समुद्री घास पर निर्भर रहते हैं। भारत के दक्षिण पूर्व तट के पाक उपसागर के समुद्री घास संस्तर ड्यूगोंग का प्रमुख आवास है। पिछली सदी में भारत और श्रीलंका के बीच की पाक संकरी खाड़ी में कई प्रकार के जीव समूहों की रिपोर्ट की गयी थी। लेकिन अब इनकी संख्या में तेज़ घटती होकर परिसमाप्ति तक पहुँच गयी है। इसका प्रमुख कारण समुद्री घास आवासों की अवनति बतायी जाती है।

पाक उपसागर के समुद्री घास समूह की वर्तमान स्तर पर पता चलने के लिए दिनांक 18 से 28 सितंबर 2013 के दौरान सी एम एफ आर आइ के मात्स्यिकी पर्यावरण एवं प्रबंधन प्रभाग द्वारा जलांदर समन्वेषी सर्वेक्षण आयोजित किया गया। वीडियो ट्रान्सेक्ट तरीके द्वारा जलांदर सर्वेक्षण चलाया गया। सर्वेक्षण के दौरान समुद्री घास की आठ जातियों याने कि साइमोडोसिया सिरुलेटा, एनहालस एकरोइडस, सिरिंगोडियम आइसोटिफोलियम, हालोफिला ओवालिस, हालोफिला बेवकारी, हालोडुले पिनिफोलिया और हालोडुले यूनिनेर्विस को पाया गया। इनमें सेतुपावाचत्रम और मनमेलकुडी क्षेत्रों के साइमोडोसिया सिरुलेटा और सिरिंगोडियम आइसोटिफोलियम के संस्तरों पर ड्यूगोंग काटने का निशान दिखाया पड़ा। इन गाँवों के मछुआरों की राय में ड्यूगोंग, जिन्हें स्थानीय रूप से “अवोलिया” या “कडल पन्नी” कहा जाता है, को इस क्षेत्र में हाल ही में दिखाया पड़ा है। संस्थान में पहले आयोजित अध्ययनों में यह सूचित किया गया था कि ड्यूगोंग साइमोडोसिया सिरुलेटा, सिरिंगोडियम आइसोटिफोलियम, हालोडुले यूनिनेर्विस, हालोफिला ओवालिस, एनहालस



मुत्तुपेट्टे के मैंग्रोव

एकरोइडस आदि समुद्री घास खाते हैं। सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में पिछली सदी के दूसरे पाद के दौरान प्रग्रहण स्थिति में किए गए पालन परीक्षणों में इन्हें खाने के लिए समुद्री घास जैसे साइमोडोसिया सिरुलेटा और हालोडुले यूनिनेर्विस दिए गए।

जलांदर सर्वेक्षण से यह व्यक्त हो गया कि पाक उपसागर में तीन प्रकार के समुद्री घास मौजूद थे जैसे (i) मंडपम क्षेत्र में पाए जाने के जैसे प्रवाल भित्तियों से जुड़े हुए समुद्री घास संस्तर (ii) अडिरामपट्टिणम, मल्लिपट्टिणम और सेतुपावाचत्रम क्षेत्रों में पाए जाने के जैसे मैंग्रोव से जुड़े हुए समुद्री घास संस्तर (iii) तोंडी, कोट्टैपट्टिणम और जगतापट्टिणम में पाए जाने के जैसे उथले रेती समुद्री घास संस्तर। समुद्री घास के मैदान चिंगटों, केकड़ों और स्क्विडों के प्रमुख अशन क्षेत्र हैं। इस क्षेत्र में परंपरागत मत्स्यन तरीके जैसे स्टेक जाल (अडप्पु वलै), स्क्विड मत्स्यन (कणव मारु), तट गिल जाल (नन्दु वलै) और एकल आनाय जाल (ओतै माडी) उपयुक्त किए जाते हैं। समुद्री घास समुदायों पर निर्धारण करने के बावजूद इन विशिष्ट आवासों की आवास व्यवस्था और इन आवास व्यवस्था से जुड़े हुए पक्षी जीवों पर भी विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया।

(आर.जयभास्करन, एल.आर.खाम्बाडकर, ए.एम.अब्बास और वी.कृपा, मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची की रिपोर्ट)



साइमोडोसिया सिरुलेटा



समुद्री घास संस्तर में तारा मछली



समुद्री घास संस्तर में समुद्री अर्चिन



समुद्री घास हालोफिला ओवालिस



समुद्री घास संस्तर में स्क्विड का अंड समुच्चय

माननीय मात्स्यिकी मंत्री तिरु के.ए.जयपाल द्वारा नागपट्टिणम जिला में कृत्रिम भित्तियों का लॉचिंग



माननीय मात्स्यिकी मंत्री तिरु के.ए.जयपाल कृत्रिम भित्तियों के विनियोजन का उद्घाटन करते हुए। श्रीमती एम.शक्ति, एम एल ए, नागपट्टिणम, जिलाधीश और विशिष्ट लोग भी उपस्थित थे।

तमिल नाडु कार्पोरेशन फोर डेवलपमेन्ट ऑफ विमेन (टी एन सी डी डब्ल्यू) के आइ एफ ए डी सहायता के पोस्ट सूनामी सस्टेनबिल लाइवलीहुड प्रोग्राम (पी टी एस एल पी) की परामर्श परियोजना के अंदर तमिल नाडु के नागपट्टिणम जिला के मडुत्तुकुप्पम गाँव में लगभग 200 कृत्रिम भित्तियों का सफल रूप से विनियोजन किया गया। पषयार नामक छोटे गाँव

के निकट के समुद्र में दिनांक 24.08.2013 को माननीय मात्स्यिकी मंत्री (तमिल नाडु) तिरु के.ए.जयपाल ने लॉचिंग का उद्घाटन किया। सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र के शास्त्रीय मार्गदर्शन से भागीदारी व्यवस्था में कृत्रिम भित्ति की सभी संरचनाओं का विनियोजन किया गया। यह कृत्रिम भित्ति संरचनाओं के विनियोजन के लिए पी टी एस एल पी के लिए

सी एम एफ आर आइ द्वारा चुने गए आठ स्थानों में एक है। अन्य जिलाओं में विनियोजन करने के लिए तिरुवल्लूर, कान्चीपुरम, कडलूर, विल्लुपुरम और कन्याकुमारी में भित्ति संरचनाओं का निर्माण प्रगति पर है।

(शोभा जो किष्कूडन, जो के.किष्कूडन, के.विनोद, आर.गीता, मद्रास अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)



भित्ति संरचनाओं के विनियोजन का दृश्य



कृत्रिम भित्ति संरचनाएं विनियोजन के लिए तैयार



तमिल नाडु के पोइन्ट कालिमेर में इन्डो-पसफिक बोटिलनोस डोल्फिन का धंसन

पाक उपसागर क्षेत्र में 21 सितंबर 2013 को किए गए फील्ड सर्वेक्षण के दौरान चोलास लाइट हाउस के पास पोइन्ट कालिमेर वन्य जीव अभयारण्य में एक मृत डोल्फिन को दिखाया पड़ा। स्थानीय मछुआरों ने बताया कि 5 दिनों पहले इस का धंसन हुआ। आकारमितीय और मेरिस्टिक विशेषताओं के आधार पर डोल्फिन को इन्डो-पसफिक बोटिलनोस डोल्फिन *टर्सियोप्स अडन्कस* (एरेनबर्ग 1833) पहचाना गया। चोलास लाइट हाउस सीमा-चिह्न है और कहा जाता है कि

हजार वर्षों पहले राजेन्द्र चोला। के शासन काल में इसका निर्माण किया गया था। वर्ष 2004 में हुई सूनामी में यह क्षतिग्रस्त हुआ और अब ईंट और चूना बाहर दिखते हैं।

(आर.जयभास्करन, ए.एम.अब्बास और एल.आर.खाम्बाडकर, मात्स्यिकी पर्यावरण एवं प्रबंधन प्रभाग, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची की रिपोर्ट)



महाराष्ट्र के रत्नगिरी में भीमाकार द्विकपाटियों की उपस्थिति

महाराष्ट्र के समुद्र में *पोलीमेडोसा एरोसा* (सोलान्डर, 1786) की उपस्थिति की रिपोर्ट की गयी। इस जाति के कवच में विशिष्टप्रकार की माटी चोटी दिखायी पड़ती है। सामान्यतः इन्हें नदीमुखों और मैंग्रोव क्षेत्रों, जहाँ रेत में छिपाकर रहते हैं। *पी.एरोसा* बड़े आकार वाली द्विकपाटी है, स्थानीय रूप से इसे *म्हारै* कहा जाता है और रत्नगिरी और धाबोल से अप्रैल से जून 2012 के दौरान दृश्यमान

हुआ। हस्तचयन से इन्हें पकड़ा जाता है और भारी मांस की वजह से इनकी बड़ी मांग है। कवच की लंबाई 30 से 94 मि.मी. है और भार 4.8 से 149.2 ग्राम है। उच्च स्तर का ऊतक याने कि टिशू होने की वजह से इसे जलकृषि में प्रत्याशी प्रजाति के रूप में उपयुक्त किया जा सकता है।

(सुजित सुन्दरम, वैभव माने, पूनम खन्डागले और नीलेश पवार, मुम्बई अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)



महाराष्ट्र के रत्नगिरी में पेर्ना विरिडिस की आकर्षक मात्स्यिकी

रत्नगिरी के भाटी संकरी खाड़ी मुँह से छोटे अयंत्रिकृत नावों, जिन्हें स्थानीय रूप से *पगार* कहा जाता है, द्वारा *पेर्ना विरिडिस* का विदोहन किया जाता है। इन नावों की कुल लंबाई 4 से 5 मी. है और इस के परिचालन के लिए सामान्य तौर पर दो लोग काफी हैं।

उत्पादन के श्रृंग काल (साधारणतया दिसंबर और जनवरी) में कुल पकड़ का परास प्रति दिन 90 से 100 कि.ग्रा. है। शंबुओं की कुल लंबाई 60 से 130 मि.मी. है। इन शंबुओं को जीवंत स्थिति में 4-5 दिन तक जालाक्षि युक्त पोलिथीन की थैलियों में पानी में डुबाकर (संकरी खाड़ी

में ही) रखा जा सकता है। स्थानीय बाज़ार में जब बढ़ती मांग है तब बाहर निकालकर बेच दिया जा सकता है।

(सुजित सुन्दरम, डेविड सावंत, वैभव माने, पूनम खन्डागले और नीलेश पवार, मुम्बई अनुसंधान केंद्र और रत्नगिरी क्षेत्र केंद्र की रिपोर्ट)



नाइलो न जालीदार थैलियों से विपणन के लिए पी.विरिडिस को बाहर निकालने का दृश्य



छोटे नावों में पी.विरिडिस का संग्रहण



ट्रिवान्द्रम के वलियतुरा में सूर्यमीन का अवतरण

दक्षिण महासागर सूर्यमीन, मास्टूरस लानसियोलाटस, जिसे साधारणतया “शार्प टेल मोला” कहा जाता है, मोलिडे कुटुम्ब की मछली है। भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर इसे विरल रूप से पाया जाता है। ट्रिवान्द्रम तट के वलियतुरा तट से दिनांक 01-08-2013 रात को 10.45 बजे ड्रिफ्ट गिल जाल द्वारा इसे पकड़ा गया। तट से लगभग 38 कि.मी. की दूरी से और 50 फाथम की गहराई से सूर्यमीन को पकड़ा गया। इसकी लंबाई 1.03 मी. और कुल भार 70 कि.ग्रा. थे। अन्य आकारमितीय मापन : शरीर की चौड़ाई 74 से.मी., पृष्ठ पख की लंबाई 45.1 से.मी., अधर पख की लंबाई 45 से.मी., अंसीय पख का आधार 5.5 से.मी. था। आँख का व्यास 5.0 से.मी. और प्री ओर्बिट लंबाई 15 से.मी. थी।

(विश्विजम अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

◀ सूर्यमीन

कोवलम (चेन्नई) में महाचिंगट पालन के लिए खुले समुद्र में पिंजरे का जलायन

कोवलम के खुले समुद्र में मछुआरों की सहभागिता से दिनांक 03.09.2013 को महाचिंगट पालन के लिए जी आइ की ढांचा (11/2" जी आइ पाइप 3 मी. का बाहरी व्यास/ 2 मी. का आंतरिक व्यास/ 1 मी. की रेल की ऊँचाई/ 2 मी. की रेल रिंग का व्यास) बनायी गयी। सी एम एफ आर आइ के तकनीकी मार्गदर्शन से मछुआरों द्वारा महाचिंगटों का संभरण, अशन और पिंजरे का अनुरक्षण किया जाता है।

(जो के.किष्कूडन,
मद्रास अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)



महाचिंगट के वजन बढ़ाव के लिए कोवलम के मछुआरों और सी एम एफ आर आइ की संयुक्त उद्यमिता से तैयार किए गए पिंजरे का दृश्य

माल्पे पोताश्रय में स्क्विडों का भारी अवतरण

माल्पे पोताश्रय में दिनांक 20.08.2013 से 23.08.2013 तक की अवधि के दौरान स्क्विड (लोलिगो डुवासेली) का भारी अवतरण हुआ। बुल ट्रालर आनायन से प्रति नाव से कम से कम 3-4 टन और प्रति नाव से अधिकतम 12 टन की पकड़ प्राप्त हुई।

जाति:- लोलिगो डुवासेली, नाव जिस से स्क्विड का अवतरण किया गया:- बहुदिवसीय बुल ट्रालर (5 से 9 रात), परिचालन की गहराई:- 60 से 80 मी., परिचालित एककों की संख्या:- 40 से 50 बुल ट्रालर।

(मांगलूर अनुसंधान केंद्र)



माल्पे पोताश्रय में स्क्विडों (लोलिगो डुवासेली) का दृश्य

मात्स्यिकी विज्ञान के
क्षेत्र में वर्ष 1954 से
लेकर प्रमुख
इंडियन जर्नल

ISSN 0970-6011



वार्षिक चंदा
रु.1000 \$ 100
निदेशक, सी एम एफ आर आइ
कोच्ची- 682 018 से संपर्क करें

इन्टरनेशनल इम्पैक्ट फैक्टर 0.195
एन ए ए एस रेटिंग 6.2

भारत के वाणिज्यिक प्रमुख क्रस्टेशियनों का वर्गिकी विज्ञान और पहचान

सीएम एफ आर आइ के क्रस्टेशियन प्रभाग ने 20-24 अगस्त 2013 के दौरान कोचीन में “भारत के वाणिज्यिक प्रमुख क्रस्टेशियनों के वर्गिकी विज्ञान और पहचान” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण का मुख्य लक्ष्य भारत के वाणिज्यिक प्रमुख चिंगटों, केकड़ों और महाचिंगटों की फील्ड पहचान के विभिन्न



डॉ. ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

पहलुओं के बारे में पाठ्य, व्यावहारिक क्लासों और खेत में मुआइने के द्वारा अवगाह जगाना था। कार्यक्रम में बीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर निदेशक ने “भारत की पोर्टूनिड केकड़ा संपदाएं” पर एक पोस्टर का विमोचन किया।



सहभागी लोग निदेशक, सी एम एफ आर आइ और संकाय सदस्यों के साथ

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में प्रशिक्षण

केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान के मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन प्रभाग के आठ और जलीय पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग के एक एम.एफ.एस सी छात्र के लिए 19 जून से 2 जुलाई 2013 तक की अवधि के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में श्री एम वी के आर मात्स्यिकी पोलिटेक्निक, भावदेवरापल्ली, आंध्रा प्रदेश के 25 छात्रों के लिए 15 से 18 जुलाई 2013 के दौरान “सजावटी मछली पालन” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में 18 से 19 जुलाई 2013 के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा जलकृषि के प्रचार के लिए हाल की प्रगतियाँ विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में 17 और 18 सितंबर 2013 को आंध्रा प्रदेश के नेल्लूर जिला के 15 मछुआरों के लिए “पिंजरे में कोबिया मछली पालन” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।



सी आइ एफ ई के छात्र संकाय सदस्यों के साथ



डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक छात्रों को भाषण देते हुए



कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशिक्षणार्थी संकाय सदस्यों के साथ



नेल्लूर के मछुआरे संकाय सदस्यों के साथ

खुला सागर पिंजरे में मछली पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

सीएम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केंद्र द्वारा कारवार अनुसंधान केंद्र में 3 से 9 अगस्त 2013 के दौरान राजकोट मछीमार व्यावसायिक सहकारी संस्था मर्यादित, मेधा के 10 मछुआरों को “खुले सागर के पिंजरे

में मछली पालन पद्धति” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान मछुआरों को मछली स्वास्थ्य, पानी की गुणता, पिंजरे की मछलियों का आहार प्रबंधन आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। मछुआरा

सहभागियों को नियमित रूप से जाल का बदलाव, जाल में संलग्न हुए बर्नकिलों और शैवालों को निकालने के लिए जाल साफ करने के तरीके के बारे में दिखाया गया।

मुम्बई अनुसंधान केंद्र द्वारा mKRISHI@FISHERIES सेवा विषय पर कार्यशाला

mKRISHI@FISHERIES सेवा में मछलियों को मछली ढूँढते हुए डीजल बरबाद करने की जरूरत नहीं है। हवा की गति और दिशा के बारे में सलाह मिलने से मछुआरे लोग नौचालन में भी परिवर्तन करके डीजल बचा सकते हैं। mKRISHI@FISHERIES सेवा पर आयोजित कार्यशाला सितंबर 2013 महीने में करांजा,

अलिबाग, म्हसाला और श्रीवर्धन में आयोजित किया गया और mKRISHI@FISHERIES सेवा के लिए चुने गए 39 हितकारियों को मोबाइल हैंड सेट प्रदान किए गए। इन कार्यशालाओं के दौरान कुल 60 मछुआरों को इस सेवा के बारे में अवगाह प्रदान किया गया।



श्रीवर्धन में मछुआरों को जलवायु परिवर्तन पर अवगाह प्रदान करते हुए



श्रीवर्धन में mKRISHI@FISHERIES सेवा के लिए मोबाइल सेट देने का दृश्य

महद और पोलापुर के ग्रामीण संपदा केंद्र के चुने गए 8 हितकारियों को mKRISHI@FISHERIES के मोबाइल हैंड सेट प्रदान किए गए। इन हैंड सेटों का प्रयोग करने से स्टेकहोल्डर कृषि फसलों, फसल में रोगों आदि के बारे में नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और अपने दोस्तों के बीच इन जानकारियों को शेयर कर सकते हैं।

(मुम्बई अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

कारवार अनुसंधान केंद्र में खुला सागर पिंजरे में मछली पालन पर प्रशिक्षण



केरल के मछुआरों के लिए व्यावहारिक क्लास



सी.एम.एफ.आर.आइ. कारवार अनुसंधान केंद्र में विभिन्न राज्यों के मछुआरों / किसानों के लिए खुला सागर के पिंजरे में मछली पालन के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। एन.एफ.डी.बी. और राज्य सरकारों द्वारा प्रशिक्षण के लिए वित्त की सहायता की गयी। प्रशिक्षण में दो दिन के

पाठ्य क्लास और बाकि दिनों में पिंजरे में मछली पालन के विभिन्न पहलुओं पर व्यावहारिक क्लास चलाए गए। डॉ. शर्मिला मोन्टीरो, निदेशक, मात्स्यिकी विभाग, गोवा, जो गोवा के मछुआरों के लिए प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे, ने गोवा के प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।

राज्य	प्रशिक्षित मछुआरों / की संख्या	तारीख
केरल	20	30 मई से 3 जून 2013 तक
गोवा	25	17 से 22 जून 2013
महाराष्ट्र	25	25 से 29 जून 2013
गोवा	25	8 से 13 जुलाई 2013
महाराष्ट्र	25	5 से 9 अगस्त 2013

डॉ.के.के.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार अनुसंधान केंद्र महाराष्ट्र के मछुआरों का संबोधन करते हुए

मूतकुन्नम में शुक्ति पालन करने वालों को पुरस्कार

एन ए आइ पी परियोजना समुद्री संवर्धन व्यवस्था के अंदर उच्च मूल्य वाले कवच मछलियों की मूल्य श्रृंखला के अंदर महिला स्वयं सहायक संघों (एस एच जी) के लिए शुक्ति पालन करने वालों के लिए सी एम एफ आर आइ के मोलस्क मात्स्यिकी प्रभाग (एम एफ डी) द्वारा दिनांक 27 सितंबर 2013 को तरयिलकवला, मूतकुन्नम में पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। मूतकुन्नम, कोट्टुवल्लिकाड, चेराय और पुत्तनवेलिककरा गाँवों से करीब 100 व्यक्तियों ने इस में भाग लिया। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ की उपस्थिति में डॉ.पी.के.कटिहा, प्रधान वैज्ञानिक (एम एंड ई), एन ए आइ पी, नई दिल्ली मुख्य अतिथि थे। श्रीमती कार्त्यायनी सर्वन, अध्यक्ष, वडक्केकरा ग्राम पंचायत कार्यक्रम में अध्यक्ष रही। डॉ. के.सुनिल मोहम्मद, अध्यक्ष, एम एफ डी ने स्वागत भाषण दिया और कार्यक्रम का उद्देश्य व्यक्त किया। श्री सुजित, वार्ड का सदस्य, वडक्केकरा ग्राम पंचायत, डॉ.एम.के.वेणु, मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फिशरीस एंड पोस्ट हार्वेस्ट तकनोलजी (एन आइ एफ पी एच ए टी टी) और डॉ.वी.कृपा, अध्यक्ष, मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग ने अभिनन्दन भाषण दिए। विभिन्न स्वयं सहायक संघों को विपणन प्रोत्साहन और विभिन्न प्रकार के पुरस्कार जैसे उत्कृष्ट शुक्ति पालन ग्रुप, उत्कृष्ट शुक्ति मांस उत्पादन ग्रुप, उत्कृष्ट शुक्ति मांस विपणन ग्रुप और शुक्ति गुणता वर्धन एकक पुरस्कार प्रदान किए गए।

कार्यक्रम से पहले सभी विशिष्ट व्यक्तियों और आमंत्रित व्यक्तियों ने मूल्य वर्धन एकक और शुक्ति खेत का मुआइना किया। शुक्तियों से एन आइ एफ पी एच ए टी द्वारा विकसित किए गए उत्पादों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी थी।



डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, डॉ.के.एस.मोहम्मद, डॉ.जी.महेस्वरुडु और डॉ.पी.के.कटिहा, प्रधान वैज्ञानिक, एन ए आइ पी (एम एंड ई), नई दिल्ली प्रदर्शनी देखते हुए

पुरस्कार	स्वयं सहायक संघ का नाम
उत्कृष्ट शुक्ति पालनकार ग्रुप	कीर्ति, मूतकुन्नम
उत्कृष्ट शुक्ति मांस उत्पादन	सुभद्रा, मूतकुन्नम
उत्कृष्ट शुक्ति मांस विपणन	ऐश्वर्या, पुत्तनवेलिककरा
शुक्ति मूल्य वर्धन एकक	श्री रमेश मोहन, मूतकुन्नम



श्रीमती प्रसीला, श्रीभद्रा एस एस जी, मूतकुन्नम निदेशक, सी एम एफ आर आइ से उत्कृष्ट शुक्ति मांस उत्पादन ग्रुप का पुरस्कार स्वीकार करती हुई

सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में नई केंद्रीकृत मात्स्यिकी जीवविज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की एन आइ सी आर ए परियोजना की सहायता से बनायी गयी नई केंद्रीकृत मात्स्यिकी जीवविज्ञान प्रयोगशाला का औपचारिक

उद्घाटन 31 जुलाई 2013 को डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ द्वारा डॉ.पी.यू.सक्करिया, अध्यक्ष, डी एफ डी की उपस्थिति में किया गया। नई बनायी प्रयोगशाला मुख्यालय मकान के चौथे तल में स्थित है जहाँ नेशनल इनीशिएटिव ओन क्लाइमेट रेसिलिएन्ट अग्रिकल्चर विषयक परियोजना के अंदर चुनी गयी समुद्री मछलियों का फीनोलोजिकल अध्ययन करने के लिए उपयुक्त की जा सकती है। इस सुविधा का एक और उद्देश्य संस्थान

के सभी संपदा प्रभागों द्वारा किए जाने वाले मात्स्यिकी जीवविज्ञान कार्य और इस से जुड़े हुए विश्लेषण कार्य केंद्रीकृत स्थान में किया जाना है। प्रयोगशाला पूरी तरह वातानुकूलित और लगभग 1530 वर्ग फीट के क्षेत्रफल का है। प्रयोगशाला में स्टेनलेस स्टील के तीन डिसेक्शन टेबिल और वाश बेसिन हैं। केंद्रीय मात्स्यिकी जीवविज्ञान प्रयोगशाला का प्रभारी अधिकारी डॉ.टी.एम.नजमुद्दीन, वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं।



डॉ.जी.सैदा रावु केंद्रीकृत मात्स्यिकी जीवविज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए

विषिंजम अनुसंधान केंद्र में निदेशक का मुआइना

निदेशक, सी एम एफ आर आइ डॉ.ए.गोपालकृष्णन और डॉ.जी. गोपकुमार, अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग एवं प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में दिनांक 13 सितंबर 2013 को सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र का मुआइना किया।



डॉ.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र के कर्मचारियों का संबोधन करते हुए



डॉ.गोपालकृष्णन, निदेशक सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र के कर्मचारियों के साथ



निदेशक विषिंजम अनुसंधान केंद्र के परिसर में वृक्ष का रोपण करते हुए

निदेशक ने यह व्यक्त किया कि विषिंजम केंद्र महासागर के अत्यंत निकट स्थित है और उन्होंने यह भी व्यक्त किया कि इस भूमि की पूरी तरह उपयोगिता की जानी चाहिए। निदेशक ने यह भी व्यक्त किया कि केंद्र को क्लाउड

मछली जाति के अतिरिक्त गोबीस, एंजेल, ब्लेनरी, रास मछली आदि विभिन्न प्रकार की सजावटी मछलियों जिनका प्रजनन कहीं भी नहीं किया हो, के प्रजनन पर ध्यान देना चाहिए। निदेशक ने नए कार्यालय मकान, समुद्री जलजीवशाला

परिसर, नए अनेक्स मकान और स्फुटनशाला शेडों का निरीक्षण किया। उन्होंने प्लॉट सं. 2, जहाँ नई स्फुटनशाला बनाने की योजना है, का भी मुआइना किया और तुरंत ही स्फुटनशाला का निर्माण शुरू करने का सुझाव दिया।

प्रकाशन

निम्नलिखित पुस्तक निकाली गयीं

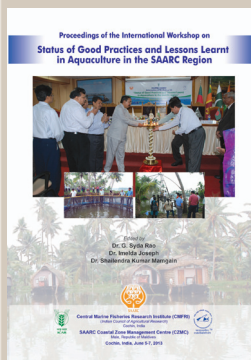
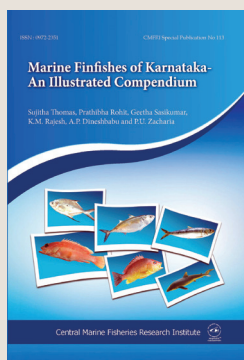
सी एम एफ आर आइ विशेष प्रकाशन सं.113

कर्नाटक की समुद्री पक्ष मछलियाँ-एक सचित्र सार-संग्रह

वर्ष 2013

पृष्ठ 421

हार्डबाउन्ड



एस ए ए आर सी क्षेत्र की जलकृषि में सीखे गए सबक और अच्छे व्यवहार का स्तर

वर्ष 2013

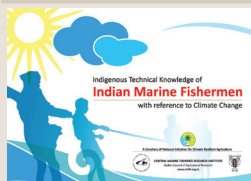
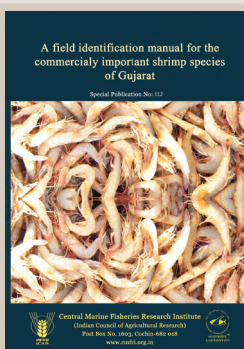
पृष्ठ 324

सी एम एफ आर आइ विशेष प्रकाशन सं.112

गुजरात की वाणिज्यिक प्रमुख चिंगट जातियों के खेत में पहचान की पुस्तिका

वर्ष 2013

पृष्ठ 27 (अंग्रेजी और गुजराती)



जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में भारतीय समुद्री मछुआरों के देशीय तकनीकी जानकारी

वर्ष 2013

पृष्ठ 124

आगामी घटनाएं

- एस ई ई टी टी डी, सी एम एफ आर आइ, कोचीन में 05-25 नवंबर 2013 के दौरान उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए आइ सी टी पर आधारित रणनीतिपरक विस्तार पर शीतकालीन पाठ्यक्रम
- मालडीव्स के कार्मिकों के लिए सी एम एफ आर आइ, कोचीन और मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में कोमनवेल्थ-सी एम एफ आर आइ का समुद्री संवर्धन अनुकूलित प्रशिक्षण

एच आर डी के आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	समायोजक का नाम	प्रशिक्षण स्थान	प्रशिक्षण की प्रत्याशित तारीख	सहभागी	बजट रु.
1.	पख मछलियों का पिंजरे में पालन	डॉ.रितेश रंजन	वी आर सी विशाखपट्टणम	7 दिन नवंबर, 2013	20 प्रत्याशी हिताधिकारी-मछुआरे	80,000
2.	भारतीय मुक्ता शुक्ति में सर्जिकल न्यूक्लीशन और मोती उत्पादन	डॉ.आइ.जगदीश	टी आर सी टूटिकोरिन	10 दिवस प्रत्याशी हिताधिकारी, उद्यमी, मछुआरिन, एस एच जी	5 बैच	25,000
3.	स्किन और स्कूबा निमज्जन में प्राथमिक प्रशिक्षण	डॉ.आइ.जगदीश	टी आर सी टूटिकोरिन	30 दिवस दिसंबर 2013 मार्च, 2014 प्रशिक्षण	5/बैच एन जी ओ/ एस एच जी प्रत्याशी हिताधिकारी-अनुसंधेता	1.5 लाख
4.	जलकृषि व्यवस्थाओं में सूक्ष्मशैवाल पालन और पानी की गुणता प्रबंधन	डॉ.सी.पी.सुजा डॉ.पी.एस.आशा	टी आर सी टूटिकोरिन	5 दिवस नवंबर 2013 प्रत्याशी हिताधिकारी-अनुसंधेता, वैज्ञानिक, अध्यापक, हैचरी तकनीशियन एवं उद्यमी लोग	15	7000
5.	समुच्चयन उपायों का कटिल फिश पर संघात पर जागरूकता कार्यक्रम	डॉ.गीता शशिकुमार	सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र प्रत्याशी हिताधिकारी-मछुआरे/एन जी ओ/अन्य स्टेकहोल्डर्स/अनुसंधेता/वैज्ञानिक	3 दिवस दिसंबर, 2013	15	50,000
6.	प्रग्रहण पर आधारित जलकृषि रीतियाँ	डॉ.सुजिता तोमस	सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र प्रत्याशी हिताधिकारी-वैज्ञानिक एवं तकनीशियन/राज्य मात्स्यिकी विभाग और कॉलेजों के सहायक एवं अध्यापक किसान और अन्य स्टेकहोल्डर्स	3 दिवस नवंबर, 2013	30	60,000
7.	पेर्लस्पोट का संतति उत्पादन	डॉ.शिनोज सुब्रमण्यन	कृ वि केंद्र का फार्म नारवकल	नवंबर 2013 (1 दिवस) प्रत्याशी हिताधिकारी-कर्मशील किसान	50	15,000
8.	पिंजरे में पख मछली का उच्च सघनता में पालन	डॉ.शिनोज सुब्रमण्यन	कृ वि केंद्र का फार्म पिंजरे में मछली पालन स्थान, कोतमंगलम	जनवरी 2014 (2 दिवस) प्रत्याशी हिताधिकारी-कर्मशील किसान	50	25,000
9.	स्टाटोलिथ उपयुक्त करके शीर्षपादों का आयु निर्णय और जाति पहचान	डॉ.के.एस.मोहम्मद/ डॉ.गीता शशिकुमार	कोच्ची/ मांगलूर प्रत्याशी हिताधिकारी-वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मचारी एम एफ डी/छात्र/विश्वविद्यालयों के अध्यापक/ अनुसंधान संस्थान	अक्तूबर-दिसंबर 2013 (4 दिवस)	25+25	50,000
10.	द्विकपाटी अंडशावकों का स्फुटनशाला में पालन	डॉ.आइ.जगदीश	टूटिकोरिन प्रत्याशी हिताधिकारी-वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मचारी एम एफ डी/छात्र/विश्वविद्यालयों के अध्यापक/ अनुसंधान संस्थान	अक्तूबर 2013	25	40,000
11.	मेबे मोती	डॉ.एम.के.अनिल	विर्षिजम प्रत्याशी हिताधिकारी-वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मचारी एम एफ डी/छात्र/विश्वविद्यालयों के अध्यापक/ अनुसंधान संस्थान	नवंबर 2013	25	40,000
12.	मोलस्क पालन	डॉ.के.एस.मोहम्मद डॉ.गीता शशिकुमार	कोच्ची / मांगलूर प्रत्याशी हिताधिकारी-राज्य मात्स्यिकी कार्मिक	दिसंबर 2013	25	40,000

किसानों / उद्यमियों के साथ करार पत्र पर हस्ताक्षर



सी एम एफ आर आइ द्वारा पिंजरे में मछली पालन और कोबिया एवं पोम्पानो मछली की प्रजनन प्रौद्योगिकी तथा समुद्री पख मछली प्रजनन में अनुसंधान एवं विकास में छः किसानों / लघु पैमाने के उद्यमियों के साथ करार पत्र में हस्ताक्षर किया गया। सी एम एफ आर आइ के साथ करार में लगे हुए ये लोग आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक और तमिल नाडु से हैं।

निदेशक के कमरे में करार पत्र पर हस्ताक्षर करने का दृश्य

डॉ.एस.अय्यप्पन, महा निदेशक, भा कृ अनु प का मद्रास अनुसंधान केंद्र में मुआइना

डॉ.एस.अय्यप्पन, महा निदेशक, भा कृ अनु प ने दिनांक 07.08.2013 को सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केंद्र का मुआइना किया और वैज्ञानिकों के साथ आपसी विनिमय किया।



डॉ.बी.मीनाकुमारी, उप महा निदेशक (मात्स्यिकी) का विषिजम अनुसंधान केंद्र में मुआइना



उप महा निदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, डॉ.बी.मीनाकुमारी ने दिनांक 28 अगस्त 2013 को सी एम एफ आर आइ विषिजम अनुसंधान केंद्र का मुआइना किया। उप महा निदेशक ने स्थायी कार्यालय परिसर के निर्माण कार्यों का निरीक्षण और नए निर्मित विषिजम अनुसंधान केंद्र के मकान के चालू विकासात्मक कार्यों का मूल्यांकन किया। उप महा निदेशक ने केंद्र के आगामी अनुसंधान और विकासात्मक योजनाओं के बारे में वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के साथ चर्चा की।

डॉ.बी.मीनाकुमारी, उप महा निदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, विषिजम की जलजीवशाला का निरीक्षण करती हुई

डॉ.एम.वी.रावु, आइ ए एस का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना

डॉ.एम.वी.रावु, आइ ए एस, चीफ एक्सिक्यूटिव, एन एफ डी बी, हाइदराबाद ने दिनांक 22.06.2013 को विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना किया। डॉ.शुभदीप घोष प्रभारी वैज्ञानिक ने केंद्र की कार्यविधियों विशेषतः पिंजरे में मछली पालन के संबंध में मछुआरा-संस्थान की सहकारिता, समुद्री मात्स्यिकी जनगणना, मछुआरों को प्रौद्योगिकी का निदर्शन, पॉप-अप साटलाइट टैग उपयुक्त करके येलोफिन ट्यूना के प्रवास पर अध्ययन, कृत्रिम भित्ति स्थापना, वाणिज्यिक प्रमुख मछली और कवच मछली संपदाओं की जीवसंख्या गतिकी के बारे में विस्तृत विवरण दिया। प्रग्रहण स्थिति में ग्रीसी ग्रुपर अंडशावक विकास की सुविधा, ग्रुपर के डिंभकों से संतति उत्पादन प्रौद्योगिकी और भविष्य में बड़े पैमाने में संतति उत्पादन के

विकास के बारे में भी उन को बताया गया। काली अधर वाली मुक्ता शुक्ति पालन और सूक्ष्म शैवाल पालन सुविधा भी उन को दिखायी गयी। उन्होंने यह सुझाव दिया कि सूक्ष्म शैवाल के स्टॉक का अनुरक्षण करने से चिंगट स्फुटनशालाओं के लिए फायदा होगा। उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि पख मछली और कवच मछली का पिंजरे में पालन, पख मछली स्फुटनशाला प्रौद्योगिकी और शैवाल पालन में एन एफ डी बी

के साथ सहकारिता से काम करेंगे तो मछुआरों के लिए लाभ होगा।



डॉ.एम.वी.रावु, चीफ एक्सिक्यूटिव, एन एफ डी बी सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना करते हुए

हिन्दी चेतना मास समारोह

सी एम एफ आर आइ मुख्यालय में राष्ट्रीय एकता और भाषायी सद्भाव पर विशेष जोर देते हुए दिनांक 1 से 28 सितंबर, 2013 को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी चेतना मास मनाया गया। इस दौरान संस्थान के

कर्मचारियों और अनुसंधेताओं के लिए हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी पर महान व्यक्तियों के वचन, टिप्पण व आलेखन, राष्ट्रीय एकता पिषय पर पोस्टर, भाषण, कविता पाठ, प्रश्नोत्तरी और ई-प्रयोग आयोजित की गयीं।

हिन्दी चेतना मास का उद्घाटन दिनांक 03 सितंबर 2013 को ई-प्रयोग पर कार्यशाला के आयोजन के साथ किया गया। डॉ.वी.कृपा, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, एफ ई एम प्रभाग



कर्मचारी सदस्यों का सांस्कृतिक कार्यक्रम

हिन्दी चेतना मास का समापन समारोह

हिन्दी चेतना मास का समापन समारोह दिनांक 28.09.2013 को आयोजित किया गया। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। अपने भाषण में उन्होंने बोलचाल की हिन्दी की प्रधानता पर जोर दिया और कर्मचारियों के लिए बोलचाल की हिन्दी के क्लास आयोजित करने का सुझाव दिया। डॉ.पी.टी.लक्ष्मणन, प्रभारी निदेशक, सी आइ एफ टी, कोचीन कार्यक्रम

में मुख्य अतिथि थे। श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सी एम एफ आर आइ ने सभा का स्वागत किया। डॉ.जे.जयशंकर, प्रधान वैज्ञानिक, एफ आर ए प्रभाग ने श्री शरद पवार, माननीय केंद्र कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री का संदेश प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि और निदेशक ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं और वर्ष के दौरान राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के



डॉ.पी.टी.लक्ष्मणन कर्मचारियों का संबोधन करते हुए

ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने बधाई भाषण दिया। श्री पी.टी.चाको, उप निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर, हैदराबाद ने इंडिक भाषाओं का प्रयोग और हिन्दी का प्रयोग सुगम और तेज़ बनाने के अन्य सॉफ्टवेयरों के बारे में क्लास चलाया। सी एम एफ आर आइ, सी आइ एफ आर आइ और एन बी एफ जी आर के कुल 30 कार्मिकों ने कार्यशाला में भाग लिया।



विषिजम अनुसंधान केंद्र में श्री एस.शिवप्रसाद, डेप्यूटी कमान्डन्ट, भारतीय तट संरक्षण सेना द्वारा कर्मचारियों का संबोधन



श्री कृज मुत्तु, हिन्दी अध्यापक, वी वी डी हायर सेकेंडरी स्कूल, टूटिकोरिन क्लास चलाते हुए



डॉ.कृष्णा श्रीनाथ हिन्दी प्रश्नोत्तरी के विजेताओं के साथ



मांगलूर अनुसंधान केंद्र में श्री सुब्रमण्य भट्ट, मुख्य अतिथि भाषण देते हुए

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में हिन्दी सप्ताह समारोह का उद्घाटन दिनांक 16 सितंबर, 2013 को ले.क.डी.अधिकारी, भारतीय



कमान्डन्ट एच.एच.मोरे, कमान्डिंग अधिकारी, भारतीय तट संरक्षण सेना, मंडपम स्टेशन पुरस्कार प्रदान करने का दृश्य

नौसेना, उच्चिपुली द्वारा किया गया। सप्ताह का समापन कार्यक्रम दिनांक 23 सितंबर 2013 को आयोजित किया गया। कमान्डन्ट एच.एच.मोरे, भारतीय तट संरक्षण सेना, मंडपम स्टेशन ने समापन भाषण दिया और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में 16 से 21 सितंबर 2013 के दौरान हिन्दी सप्ताह मनाया गया। हिन्दी सप्ताह का समापन कार्यक्रम दिनांक 21 सितंबर 2013 को आयोजित किया गया। डॉ.वीरोत्तमा पटार, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि रहे।



विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में हिन्दी सप्ताह के समापन कार्यक्रम का दृश्य

विभिन्न कंप्यूटर सिस्टम में हिन्दी फोंट के इन्स्टलेशन और प्रयोग पर दिनांक 31.08.2013 को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित किया गया। केंद्र के वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक कार्मिकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

मुख्यालय में ओणम समारोह

सीएम एफ आर आइ मुख्यालय में 11 सितंबर 2013 को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ ओणम मनाया गया। सी एम एफ आर आइ के मनोरंजन क्लब द्वारा पूककलम, टग ऑफ वार और म्यूसिकल चेयर प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। प्रसिद्ध मलयालम फिल्म निर्देशक श्री सिद्धिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे। इस दौरान मशहूर कोमेडियन श्री धर्मजन

बोल्गाटी, सोसाइटी ऑफ ओर्गन रिट्रीवल एंड ट्रान्सप्लान्टेशन (एस ओ आर टी) सचिव डॉ. वसन्त षेणाय और सी एम एफ आर आइ निर्देशक डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने बधायी भाषण दिए। मनोरंजन क्लब की चैरिटी कार्यविधियों के भाग के रूप में अवयव दान के लिए सहमत कर्मचारियों द्वारा भरे गए प्रपत्र डॉ. वसन्त षेणाय को दिए गए। विभिन्न प्रभागों और अनुभागों के कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।



श्री सिद्धिक, फिल्म निर्देशक कर्मचारियों का संबोधन करते हुए



मुख्यालय में पूककलम के साथ मावेली



कर्मचारियों का तिरुवातिराकली



वडमवली प्रतियोगिता का दृश्य



विषिजम, ट्रिवान्द्रम के नए कार्यालय परिसर में सजाया गया ओणम पूककलम



मांगलूर अनु. केंद्र में ओणम के दौरान सजाया गया परंपरागत पूककलम



मुख्यालय में पूककलम विजेता गण श्री सिद्धिक से ट्रॉफी स्वीकार करते हुए

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में स्वतंत्रता दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस समारोह के भाग के रूप में सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में मनोरंजन क्लब द्वारा 15 अगस्त 2013 को खेलकूद और सांस्कृतिक संध्या आयोजित किए गए।



डॉ. जी. गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक अध्यक्षीय भाषण पेश करते हुए, उन्होंने सांस्कृतिक संध्या में पुरस्कार प्रदान किए



सी एम एफ आर आइ में नेत्र चिकित्सा कैम्प

सीएम एफ आर आइ के मनोरंजन क्लब के पहल के रूप में प्रमुख ओप्टिकल लोरन्स एंड मेयो द्वारा सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में दिनांक 31 अगस्त 2013 को नेत्र चिकित्सा कैम्प आयोजित किया गया। अवयव दान के संबंध में दोपहर 2 बजे एस ओ आर टी के डॉ. षेणाय के जागरूकता भाषण के बाद कैम्प

शुरू हुआ जिस में 4 ओप्टोमेट्रिस्टों द्वारा सी एम एफ आर आइ के लगभग 100 कर्मचारियों के नेत्र का स्क्रीनिंग करके समस्याओं का समाधान दिया। इस के बाद अवयव दान के बारे में कर्मचारियों में जागरूकता जगाने के उद्देश्य से दो सप्ताह का अवयव दान अभियान भी आयोजित किया गया।

टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र में चिकित्सा कैम्प

सीनाक्षी मिशन हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर, मदुरै द्वारा दिनांक 11.09.2013 को सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र, टूटिकोरिन में चिकित्सा कैम्प आयोजित किया गया। इस चिकित्सा कैम्प में लगभग 100 व्यक्तियों ने भाग लिया।

कृ वि कें द्वारा फल मक्खी जाल का परिचय

तरकारी के फूलों और अपक्व फलों पर फल मक्खी अंडे डालने और स्फुटित डिंभकों से मूल्यवान तरकारियों पर नुकसान पहुँचाने की वजह से केरल के किसान दुविधा में पड़ गए हैं। कीटकनाशकों के प्रयोग से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। अतः कृषि विज्ञान केंद्र ने नारियल के खोल से परिस्थिति अनुकूल फल मक्खी जाल का रूपायन किया। किसानों को फल मक्खियों का आकर्षण करने के लिए

फल और गुड़ का मिश्रण नारियल खोल में रखना चाहिए। इस के साथ छोटी मात्रा में एक रसायनिक भी जोड़ देना चाहिए। फल मक्खी जाल से कीटकनाशकों के लिए होने वाला खर्च कम किया जा सकता है। इस में छोटी मात्रा में रसायनिक का उपयोग करने पर भी इस से तरकारियों पर सीधा संबंध नहीं होता है। फल मक्खी जाल शाकवाटिका के लिए भी अधिक



किसान अपने तरकारी खेत में फल मक्खी जाल का उपयोग करते हुए उपयोगी है। इस के एक यूनिट की लागत आइ एन आर 25/- मात्र है।

राज्य स्तरीय कार्यशाला

कृषि विज्ञान केंद्र ने कोतमंगलम में दिनांक 30 अगस्त 2013 को मीठा पानी कार्प मछली के प्रजनन और संतति उत्पादन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। सी एम एफ आर आइ के एच आर डी सेल की वित्तीय सहायता से कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री टी.यू.कुरुविला, एम एल ए (कोतमंगलम) ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और डॉ.षिनोज सुब्रमण्यन, कार्यक्रम समायोजक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किसानों के खेत में वहनीय कार्प हैचरी की स्थापना से कार्प मछली संततियों के उत्पादन पर कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यमिता विकास कार्यक्रम पर भाषण दिया। इस दौरान

एम एल ए ने कृ वि कें और सेन्ट जोसफ फिश फार्म, करिंगषा की संयुक्त सहकारिता में पी पी पी तरीके से उत्पादन किए गए कार्प मछली संततियों के पहले बैच का प्राथमिक विपणन किया। डॉ.वी.एस.बशीर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, राष्ट्रीय मछली आनुवंशिक ब्यूरो, कोच्ची ने मीठा पानी मछलियों के प्रजनन और संतति उत्पादन विषय पर क्लास चलाया। श्री विकास पी.ए., वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने कार्प मछली की पोर्टबिल हैचरी का निदर्शन किया। श्री जोसफ तकडिएल, किसान एवं उद्यमी ने अपने अनुभवों का विवरण दिया।



कोतमंगलम एम एल ए श्री टी.यू.कुरुविला कार्प मछली संततियों का पहला विपणन करते हुए

तिरुता मछली संग्रहण मेला

एरणाकुलम जिला के तटीय क्षेत्र पश्च जल संपदाओं से समृद्ध है। इन जल क्षेत्रों का अधिक भाग किसी न किसी आय जगाने की कार्यविधियों के लिए उपयुक्त किया जाता है। पालन योग्य मछली और जाति विशेष की प्रौद्योगिकी का अभाव कृषि जैसे आय जगाने की कार्यविधियों के लिए इन संपदाओं की उपयोगिता में विडंबना है। इस परिदृश्य में एरणाकुलम के निकट कुम्बलंगी के श्री अंब्रोस तोम्मशेरी के खेत में मल्लेट मछली (स्थानीय नाम तिरुता) के शास्त्रीय पालन का निदर्शन किया गया और दिनांक 17 सितंबर 2013 को फसल संग्रहण मेला भी आयोजित की गयी। कुम्बलंगी पंचायत अध्यक्ष श्री उषा प्रदीप ने मेला का उद्घाटन किया। डॉ.षिनोज सुब्रमण्यन, कार्यक्रम समायोजक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक अध्यक्ष रहे। पंचायत वार्ड का सदस्य श्री जूड भी इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री विकास पी.ए.,



कुम्बलंगी पंचायत अध्यक्ष श्रीमती उषा प्रदीप मछली संग्रहण मेला उद्घाटन करने का दृश्य



संग्रहित मल्लेट मछली

सब्जेक्ट माटर स्पेशलिस्ट ने शास्त्रीय मछली पालन के तकनीकी पहलुओं की रूपरेखा दी और निदर्शन स्थान में किए गए हस्तक्षेपों पर भी विवरण दिया। मछली संततियों की लागत, खाद्य, तालाब की सफाई और अन्य विविध व्यय के लिए हुआ खर्च 44,500/- रुपए था। कुल 500 कि.ग्रा. मछली का संग्रहण किया और इन्हें प्रति किलो ग्राम के लिए 500/- रुपए में बेच दिया गया और इस से 2.5 लाख रुपए का

कुल आय प्राप्त हुआ। श्री अम्ब्रोस और उनके मित्रों को मछली पालन तकनीक और आर्थिक लागत पर जानकारी प्राप्त हुई। कुम्बलंगी में मछुआरों का एक ग्रुप अगले पालन मौसम में अपनी निधि से मल्लेट मछली के शास्त्रीय पालन के लिए आगे आया है। एरणाकुलम जिला के तटीय क्षेत्रों में इस तरह अनुपयुक्त पड़ गए पश्च जल क्षेत्रों में मछली पालन प्रोत्साहित करने के लिए कृ वि केंद्र भी तैयार है।

कृषि विज्ञान केंद्र का प्रशिक्षणार्थी खुम्भी किसान और उद्यमी बन गया

ए.आर.श्रीकुमार, केरल के एरणाकुलम जिला के पेरुम्बावूर का युवा किसान ने अप्रैल, 2012 को खुम्भी पालन पर कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया। खुम्भी पालन के अवसर और साध्यताओं के बारे में जानकर उन्होंने पालन एकक स्थापित करने का निर्णय लिया। लेकिन पालन कार्य में बार बार हारने पर उन को मालूम पड़ा कि यह आसान कार्य नहीं है और खुम्भी पैदावार के लिए अत्यंत ध्यान और संरक्षण की जरूरत है। कृषि विज्ञान केंद्र के टीम की तकनीकी सहायता

और प्रोत्साहन से उन्होंने लगातार प्रयास किया और अंत में ओयस्टर खुम्भी पालन का एकक स्थापित किया। धीरे धीरे उन्होंने पालन एकक की क्षमता बढ़ायी और अब प्रति दिन 10 किलो ग्राम खुम्भी का उत्पादन किया जा रहा है। इस के लिए धरातल के रूप में वे रबड़ के चूरे का उपयोग करते हैं। वहाँ स्थानीय बाजार में ताजा चूरा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इस कदम में अच्छी गुणता वाले प्रजनकों की अनुपलब्धता और एक मुख्य समस्या है। इस समस्या का समाधान करने के लिए उन्होंने कृ वि केंद्र से

प्रजनकों का उत्पादन करने की तकनीक सीखी और प्रजनक उत्पादन प्रयोगशाला प्रारंभित की। अब वे प्रजनकों और खुम्भी का उत्पादन करके 220/- रुपए के खेत के मूल्य पर खुम्भी बेचते हैं। वे अब पेरुम्बावूर का अग्रणी खुम्भी किसान हैं। कृषि विज्ञान केंद्र अब इसी नमूने में जिला में समान खुम्भी एककों की स्थापना करने के प्रयास में है।



- **डॉ.ए.गोपालकृष्णन**, निदेशक ने बी ओ बी एल एम ई/ एफ ए ओ/ एन बी एफ जी आर द्वारा एन बी एफ जी आर कोच्ची एकक में दिनांक 20-27 अगस्त 2013 के दौरान आयोजित भारतीय बांगडा आनुवंशिकी पर अंतर्राष्ट्रीय हार्मोनाइजेशन कार्यशाला के उद्घाटन और समापन कार्यक्रम में भाग लिया और उक्त कार्यशाला में संकाय सदस्य रहे।

सचिव, डेयर एवं महा निदेशक, भा कृ अनु प की अध्यक्षता में 29 से 31 अगस्त 2013 के दौरान अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं और सभी प्रभागों की नेट वर्क परियोजनाओं के पुनरीक्षण और अंतिम रूप देने और अग्री-कनसोर्शिया अनुसंधान प्लेटफॉर्म की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ.के.एस.मोहम्मद**, अध्यक्ष, एम एफ डी ने मद्रास पशुचिकित्सा कॉलेज परिसर, चेन्नई - 600 007 में दिनांक 24 अगस्त 2013 को आयोजित शैक्षिक परिषद की 55वीं बैठक में भाग लिया।
- कृषि भवन, नई दिल्ली में भारतीय अनन्य आर्थिक मेखला के लिए परिशोधित फलीट योजना के आकलन के लिए गठित समिति की दिनांक 11 सितंबर 2013 को आयोजित चौथी बैठक में भाग लिया।
- चालू परियोजना स्थान याने कि डी ओ डी ब्लैक पेरल परियोजना कार्यालय मराइन हिल, पोर्ट ब्लेयर में प्रतिधारित रखने के संबंध में निदेशक और सचिव, मात्स्यिकी के साथ 25.08.2013 और 31.08.2013 के दौरान आयोजित बैठकों में भाग लिया और सचिव ने कार्यालय का मुआइना करके नोर्ट बे, पोर्ट ब्लेयर में नए स्थान का सर्वेक्षण किया। नोर्ट बे में नया खेत स्थापित करने के लिए स्थान का चयन किया गया।

- **डॉ.पी.यू.सक्करिया**, अध्यक्ष, डी एफ डी ने मत्स्यन रोध की अवधि का पुनरीक्षण करने के लिए 12 जुलाई 2013 को आयोजित समिति की पहली बैठक में भाग लिया और समिति के को-ओप्टड सदस्य के रूप में परिरक्षण एवं प्रबंधन के लिए आगे से उठाए जाने वाले कदमों के बारे में सुझाव दिया।
- **डॉ.पी.यू.सक्करिया**, अध्यक्ष, डी एफ डी, **डॉ.आर.नारायणकुमार**, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी, **डॉ.टी.वी.सत्यानन्दन**, प्रभारी अध्यक्ष, **डॉ. जे.जयशंकर**, **डॉ.वी.वी. सिंह**, **डॉ.प्रतिभा रोहित**, प्रधान वैज्ञानिक गण, **डॉ.आइ.राजेन्द्रन**, **डॉ.ग्रिन्सन जोर्ज**, वरिष्ठ वैज्ञानिक गण, **डॉ.जोनसन बी.**, **श्री ज्ञानरंजन दास**, **डॉ.अमीर कुमार सामल**, **श्रीमती अनुलक्ष्मी चेल्लप्पन**, **श्रीमती कार्ती रेड्डी श्यामला**, **श्री विनय कुमार वास**, **श्री एल.रंजित**, **श्री एन.राजेन्द्र नाइक**, वैज्ञानिक गण ने 18-19 जुलाई 2013 को स्पेस अप्लिकेशन सेन्टर, अहम्मदाबाद में भारतीय समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं के

विदेश में प्रतिनियुक्ति

वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ.प्रतिभा रोहित (प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र) और डॉ.ई.एम.अब्दुसमद (प्रधान वैज्ञानिक, कोच्ची) ने बाली, इन्डोनेशिया में 2-5 जुलाई 2013 के दौरान इन्डियन ओशियन ट्यूना कमीशन (आइ ओ टी सी) द्वारा आयोजित थर्ड वर्किंग पार्टी ओन नेरिटिक ट्यूनास (3 डब्ल्यू पी एन टी) में भाग लिया। डॉ.प्रतिभा रोहित ने वर्किंग पार्टी बैठक में अध्यक्ष रही। बैठक के दौरान नेरिटिक ट्यूना नारो बार्ड स्पैनिश माकरेल पर "भारतीय तट की नेरिटिक ट्यूना मात्स्यिकी और लॉगटेल और फ्रिगेट ट्यूना के जीवविज्ञान और जीवसंख्या विशेषताएं" और "भारत से विदोहन किए गए नारो बार्ड स्पैनिश माकरेल स्कोम्बरोमोरस कमेर्सन की



डॉ.प्रतिभा रोहित और डॉ.ई.एम.अब्दुसमद बाली, इन्डोनेशिया में आयोजित नेरिटिक ट्यूना की तीसरी वर्किंग पार्टी में

मात्स्यिकी, जीवविज्ञान और जीवसंख्या गतिकी" विषयक दो स्टेटस लेख प्रस्तुत किए गए। बैठक में सोलह सदस्य देशों से कुल पैंतीस लोगों ने भाग लिया।

- **डॉ.टी.एम.नजमुद्दीन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने नेथरलैन्ड में वेगलिंगन विश्वविद्यालय में 2 से 13 सितंबर 2013 के दौरान जलवायु परिवर्तन गवर्नेन्स: अनुकूलन और अल्पीकरण विषय पर आयोजित अल्प कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।



डॉ.टी.एम.नजमुद्दीन वेगलिंगन विश्वविद्यालय, नेथरलैन्ड में

दूरसंवेदन की सहायता से जैवगतिकीय पूर्वानुमान रूपावली विषयक परियोजना के संबंध में स्पेस अप्लिकेशन सेन्टर के साथ संपर्क कार्य का अंतिम रूप देने के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ.पी.यू.सक्करिया**, अध्यक्ष, डी एफ डी और डॉ.रेखा जे.नायर, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने

आइ ए आर आइ, नई दिल्ली में 17-18 जून 2013 को आयोजित एन आइ सी आर ए की वार्षिक पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

- **डॉ.जी.महेश्वरुडु**, अध्यक्ष, सी एफ डी ने सी आइ बी ए, चेन्नई में दिनांक 01.07.2013 को आयोजित 42वीं आइ एम सी बैठक में भाग लिया।

- **डॉ.आर.नारायणकुमार**, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी और **डॉ.जे.जयशंकर**, प्रधान वैज्ञानिक ने एन सी ए पी, नई दिल्ली में दिनांक 17.07.2013 को "पेरफॉर्मन्स इन्डिकेटर" विषय पर महा निदेशक और मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के निदेशकों की बैठक में भाग लिया।
- उन्होंने ए एस सी आइ, हैदराबाद में दिनांक 26 अगस्त से 6 सितंबर 2013 के दौरान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित सामान्य प्रबंधन कार्यक्रम में भाग लिया।
- **डॉ.टी.वी.सत्यानन्दन**, प्रभारी अध्यक्ष, एफ आर ए डी और **डॉ.मिनी के.जी.**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने इन्टरनाशनल सेंटर, डोना पॉला, गोवा में दिनांक 30.08.2013 को "मात्स्यिकी सेक्टर में डाटाबेस और जी आइ एस का सशक्तीकरण" विषय पर पशुपालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग के केंद्रीय सेक्टर स्कीम के लिए तकनीकी मॉनीटरिंग समिति की 11वीं बैठक में भाग लिया और समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2015 के बारे में प्रस्तुतीकरण किया।
- **डॉ.जी.गोपकुमार**, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र ने आल सेइन्ट्स कॉलेज, तिरुवनंतपुरम में दिनांक 19 जुलाई 2013 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य भाषण दिया।
- उन्होंने भा कृ अनु प, नई दिल्ली में 29 से 31 अगस्त 2013 के दौरान नेटवर्क परियोजना प्रस्ताव का अंतिम रूप देने के लिए महा निदेशक द्वारा बुलाई गयी बैठक में भी भाग लिया।
- **डॉ.जी.गोपकुमार**, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र, **डॉ.ए.के.अब्दुल नासर**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, **डॉ.आर.जयकुमार**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 3 अगस्त 2013 को अण्णामलै विश्वविद्यालय, परंगिपेट्टे के समुद्री जीवविज्ञान के सी ए एस के समुद्री सजावटी मछली प्रजनन एकक और दक्षिण पिच्चावरम के सिल्वर पोम्पानो निदर्शन खेत का मुआइना किया।
- **डॉ.विनय डी.देशमुख**, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केंद्र, मुम्बई ने अलिबाग में दिनांक 30 जुलाई 2013 को आयोजित जिला मात्स्यिकी परिषद बैठक में भाग लिया।
- गिरगाँव पुलिन में दिनांक 13 सितंबर 2013 को हुए गणेश निमज्जन के दौरान हुए जेली फिश और स्टिंग रे के हमले का कारण ढूँढने के लिए मुख्य मंत्री, महाराष्ट्र राज्य द्वारा बुलाई गयी बैठक में भाग लिया।
- बृहद् मुम्बई नगर पालिका निगम के आयुक्त और मुम्बई पुलिस आयुक्त के अनुरोध पर स्टिंग रे के आक्रमण पर सर्वेक्षण और अवगाह देने के लिए दिनांक 18 सितंबर 2013 को गणेश निमज्जन स्थान का मुआइना किया।
- **डॉ.के.के.जोशी**, प्रधान वैज्ञानिक ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय और जी आइ इज़ेड द्वारा 5-6 सितंबर 2013 को नई दिल्ली में भारत की तटीय एवं समुद्री जैव विविधता प्रबंधन के लिए इन्डो जर्मन सहकारिता विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.के.विनोद**, प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केंद्र ने मात्रार खाड़ी की जीव संपदाएं: श्रीलंका और भारत के बीच परिरक्षण नीति के रूपायन के लिए अवगाह बनाने और प्रमुख जीव जातियों और आवासों का निर्धारण विषयक आइ यू सी एम - एम एफ एफ गल्फ ऑफ मात्रार क्षेत्रीय परियोजना के अंदर दिनांक 02.09.2013 को बी ओ बी पी-आइ जी ओ कार्यालय, चेन्नई में आयोजित राष्ट्रीय पणधारी बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.के.के.फिलिप्पोस**, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार अनुसंधान केंद्र ने डी ए एच डी, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में दिनांक 6 सितंबर 2013 को अंतःस्थलीय और समुद्री पिंजरों से मछली पकड़ की शक्यता के पुनर्मूल्यान के लिए गठित समिति की पहली बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.शुभदीप घोष**, प्रभारी वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने ए.पी.शिन्डे सिम्पोसियम हॉल, एन ए ए एस समुच्चय, पूसा, नई दिल्ली में 21 से 23 जुलाई 2013 के दौरान आयोजित एन एफ बी एस एफ ए आर ए की तीसरी वार्षिक मूल्यांकन कार्यशाला में भाग लिया।
- सी आइ एफ आर आइ बैरकपुर में दिनांक 27 जुलाई 2013 को एन एफ बी एस एफ ए आर ए की निधिबद्ध परियोजना "हिल्सा मछली (टेनुलोसा इलीशा) की स्टॉक विशेषता, प्रग्रहण स्थिति में प्रजनन, संतति उत्पादन और पालन" के संबंध में आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. प्रतिभा रोहित**, प्रधान वैज्ञानिक ने दिनांक 20-09-2013 को बी ए आर सी, मुम्बई में बोर्ड ऑफ रिसर्च इन न्यूक्लियर सयन्स (बी आर एन एस), परमाणु ऊर्जा विभाग के अंदर आयोजित परियोजना पुनरीक्षण के तकनीकी कार्यक्रम चर्चा बैठक में आमंत्रित विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।
- **डॉ.दिनेशबाबु ए.पी.**, प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ.स्वातिलक्ष्मी पी.**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने नई दिल्ली में दिनांक 17-06-2013 से 19-06-2013 के दौरान आयोजित एन आइ सी आर ए पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.दिनेशबाबु ए.पी.**, प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ.सुजिता तोमस**, ने एन आइ ओ, गोवा में दिनांक 16-09-2013 को आयोजित "एस आइ बी ई आर इन्डिया" राष्ट्रीय पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।
- सी आइ एफ आर आइ बैरकपुर में दिनांक 15-19 अगस्त 2013 के दौरान "हिल्सा मछली (टेनुलोसा इलीशा) की स्टॉक विशेषता, प्रग्रहण स्थिति में प्रजनन, संतति उत्पादन और पालन" विषयक परियोजना के अंदर स्थान सर्वेक्षण के संबंध में आयोजित समन्वयन समिति बैठक और मछुआरा सहकारी संघों की बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.वीरेन्द्र वीर सिंह**, प्रधान वैज्ञानिक ने समुद्री उत्पाद निर्यात विकास निगम द्वारा उल्वा, मोहा गाँव में दिनांक 21 जून 2013 को आयोजित पंक केकडा मात्स्यिकी प्रबंधन कार्यशाला में मुख्य भाषण दिया।
- अलिबाग में दिनांक 30 जुलाई 2013 को आयोजित रायगड जिला मात्स्यिकी परिषद की बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.जे.जयशंकर**, प्रधान वैज्ञानिक ने अनन्य आर्थिक मेखला में फ्लीट साइज़ का आकलन करने के लिए पशुपालन एवं डेरी विभाग द्वारा नई दिल्ली में दिनांक 11 सितंबर, 2013 को आयोजित चौथी समिति बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.जो के.किषक्कूडन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि संस्थान (सी आइ एफ ए) द्वारा "पानी लचीला जलकृषि-विशन 2050" विषय पर दिनांक 06.09.2013 को भुवनेश्वर में आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.जो के.किषक्कूडन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक और **डॉ.एस.एन.सेथी**, वैज्ञानिक ने पुदुच्चेरी में दिनांक 27.08.2013 को टिकाऊ मात्स्यिकी विषय पर एम पी ई डी ए द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.आर.जयभास्करन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय और जी आइ इज़ेड द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 5-6 सितंबर 2013 के दौरान नई दिल्ली में "वर्तमान और शक्य तटीय और समुद्री संरक्षित क्षेत्र का परिरक्षण एवं टिकाऊ प्रबंधन" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.ए.के.अब्दुल नासर**, वरिष्ठ वैज्ञानिक और **डॉ.आर.जयकुमार**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 9 से 11 जुलाई 2013 के दौरान तमिल नाडु के चिदम्बरम और आंध्रा प्रदेश के नेल्लूर और कोटा के पोम्पानो और कोबिया मछली पालन खेतों के निदर्शन खेतों का मुआइना किया।
- **डॉ.ए.के.अब्दुल नासर**, वरिष्ठ वैज्ञानिक और **डॉ.आर.जयकुमार**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 2 से 7 सितंबर 2013 के दौरान आंध्रा प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिला के भीमावरम के पोम्पानो मछली पालन खेत और आंध्रा प्रदेश के कृष्णा जिला के नागय

लंका के मच्चिलिपट्टणम निदर्शन खेत का मुआइना किया।

- **डॉ. ग्रिनसन जोर्ज**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने राष्ट्रीय दूरसंवेदन केंद्र, हैदराबाद में विभिन्न ओ सी एम एल ए सी-360 एम आंकड़ों के रीग्रासिंग चेइन पर चर्चा करने और अंतिम रूप देने के लिए दिनांक 27 अगस्त 2013 को आयोजित ब्रेइन स्टोर्मिंग सेशन में भाग लिया और भाषण दिया।

- **सुश्री इन्दिरा दिविपाला**, वैज्ञानिक न राष्ट्रीय दूरसंवेदन केंद्र, हैदराबाद में 3 जून से 23 अगस्त 2013 के दौरान “जियो-स्पाट ल प्रौद्योगिकियाँ और प्रयोग” विषय पर आयोजित 12 हफ्तों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

- वसंत स्कवायर मॉल, लोवर ग्राउन्ड फ्लोर, वसंत कुंज, नई दिल्ली में दिनांक 13 जून

2013 को “बदलते जलवायु में टिकाऊ समुद्री खाद्य सुरक्षा और कार्बन मामले: आस्ट्रेलिया और भारत की चुनौतियाँ” विषय पर परियोजना प्रस्ताव के प्रस्तुतीकरण के लिए आयोजित विज्ञान विभाग की सलाहकार समिति बैठक एवं इंजीनियरिंग बोर्ड बैठक में भाग लिया।

कार्मिक समाचार

कार्यभार ग्रहण

1. श्री वी.मोहनन, प्रशासनिक अधिकारी, भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कालिकट ने दिनांक 30.07.2013 को सी एम एफ आर आइ के प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यग्रहण किया।

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	पदोन्नत पद	प्रभावी तारीख	केंद्र
डॉ.विद्या जयशंकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक पी बी-3: रु.15,600-39,100+आर जी पी रु.8000/-	वरिष्ठ वैज्ञानिक पी बी-4:37,400-67,000 + आर जी पी रु.9000/-	06.04.2013	मद्रास अनुसंधान केंद्र
डॉ.(श्रीमती) मिनी के.जी., वैज्ञानिक पी बी-3: रु.15,600-39,100+आर जी पी रु.8000/-	वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में पुनःपदनाम पी बी-4:37,400-67,000 + आर जी पी रु.9000/-	01.01.2010	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
डॉ.(श्रीमती) रेखादेवी चक्रवर्ती, वैज्ञानिक पी बी-3: आर जी पी रु.7000/-	वरिष्ठ वैज्ञानिक पी बी-3: रु.15,600-39,100 + आर जी पी रु.8000/-	17.12.2012	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
डॉ.(श्रीमती) बिन्दु सुलोचनन, वैज्ञानिक पी बी-3: आर जी पी रु.7000/-	वरिष्ठ वैज्ञानिक पी बी-3: रु.15,600-39,100 + आर जी पी रु.8000/-	10.09.2013	मांगलूर अनुसंधान केंद्र
डॉ.एस.आर.कृपेश शर्मा, वैज्ञानिक (एस एस)	वरिष्ठ वैज्ञानिक रु.12,000-18,300/- (पुनरीक्षण पूर्व)	27.03.2008	कारवार अनुसंधान केंद्र
डॉ.(श्रीमती) पी.एस.स्वातिलक्ष्मी, वैज्ञानिक (एस एस)	वरिष्ठ वैज्ञानिक रु.12,000-18,300/- (पुनरीक्षण पूर्व)	30-08-2006	मांगलूर अनुसंधान केंद्र
डॉ.(श्रीमती) एस.लक्ष्मी पिल्लै, वैज्ञानिक (एस एस)	वैज्ञानिक (एस जी) रु.12,000-18,300/- (पुनरीक्षण पूर्व)	21-06-2007	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
डॉ.(श्रीमती) सुजिता तोमस, वैज्ञानिक (एस एस) रु.12,000-18,300/-	वैज्ञानिक (एस जी) (पुनरीक्षण पूर्व)	21-06-2007	मांगलूर अनुसंधान केंद्र
डॉ.(श्रीमती) शोभा जो किषकूडन, वैज्ञानिक (एस एस)	वैज्ञानिक (एस जी) रु.12,000-18,300/- (पुनरीक्षण पूर्व)	05-07-2007	मद्रास अनुसंधान केंद्र
डॉ.(श्रीमती) गीता शशिकुमार, वैज्ञानिक (एस एस)	वैज्ञानिक (एस जी) रु.12,000-18,300/- (पुनरीक्षण पूर्व)	05-07-2007	मद्रास अनुसंधान केंद्र
डॉ.पी.रमेश कुमार, वैज्ञानिक आर जी पी रु.6000/-	वैज्ञानिक आर जी पी रु.7,000/-	26-02-2013	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र
श्री सी.कालिदास, वैज्ञानिक आर जी पी रु.6000/-	वैज्ञानिक आर जी पी रु.7,000/-	07-01-2013	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र
डॉ.रितेश रंजन, वैज्ञानिक आर जी पी रु.6000/-	वैज्ञानिक आर जी पी रु.7,000/-	09-03-2013	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र
श्रीमती के.वी.सजिता, वैयक्तिक सहायक	निजी सचिव	24-07-2013	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
श्रीमती पी.के.मेरी, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	15-06-2013	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
श्रीमती डी.माधवी लता, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	02-08-2013	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र
श्रीमती बिन्नी चेरियान, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	08-08-2013	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
श्री ई.ए.रूपेश, निम्न श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक	26-08-2013	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
श्री जस्टिन जोय, के.एम., एस एस एस	तकनीशियन	01-07-2013	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
श्री मोशे, एस एस एस	तकनीशियन	01-07-2013	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र
श्रीमती कोनसीस मेरी, एस एस एस	तकनीशियन	01-07-2013	टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र
श्री बी.कतिरेशन, एस एस एस	तकनीशियन	02-08-2013	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र

स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
डॉ.पी.लक्ष्मीलता, प्रधान वैज्ञानिक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	20.05.2013
श्री के.सोलमन, टी-1-3 (तकनीकी सहायक)	विषिजम अनुसंधान केंद्र	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	15-07-2013
श्री एम.एन.सत्यन, वरिष्ठ तकनीशियन (मोटर ड्राइवर)	कालिकट अनुसंधान केंद्र	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01-08-2013
श्रीमती धन्या जी., तकनीशियन	कारवार अनुसंधान केंद्र	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	11-07-2013
श्री के.मुरुगन, तकनीशियन	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र	17-07-2013
कुमारी प्रियंका कुमारी, सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	17-07-2013
श्री सी.पी.उमाशंकर, निम्न श्रेणी लिपिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	कालिकट अनुसंधान केंद्र	06-07-2013
श्री आर.पाइडी राजु, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	07-08-2013

बैठकों का आयोजन

सी एम एफ आर आइ की 12वीं संस्थान संयुक्त परिषद की 3वीं बैठक दिनांक 9 जुलाई 2013 को सी एम एफ आर आइ विषिजम अनुसंधान केंद्र में आयोजित की गयी।

पदत्याग

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
श्री राजर्षी चकमा	सहायक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	20.09.2013(अपराह्न)

स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
श्री टोमी प्रिन्स एम.जे.	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01.08.2013(पूर्वाह्न)
श्री ए.अबु बिन मेहसम	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	01.05.2013(पूर्वाह्न)

सेवा से निष्कासन

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
श्री एम.जोसफ सहायराज	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र	07.02.2013

वरिष्ठ अधिकारियों की सेवानिवृत्ति पर सलामी



श्रीमती के.के.कोसल्या
सहायक
31.07.2013 कोचीन



श्री के.राम मोहन
तकनीकी अधिकारी
31.07.2013 विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र



श्री एन.बुरय्या
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
31.07.2013 नरसापुर क्षेत्र केंद्र



श्री गोविन्दनाथ चूदासामा
तकनीकी अधिकारी (मोटर ड्राइवर)
31.08.2013 वेरावल क्षेत्रीय केंद्र



श्री ए.पलनिचामी
तकनीकी सहायक
31.08.2013 मंडपम क्षेत्रीय केंद्र

निधन

हमारे प्रिय सहयोगियों के वियोग
पर सी एम एफ आर आइ परिवार
श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं



श्री रमेश बी.राजु
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
अलिबाग क्षेत्र केंद्र 12.08.2013



श्री सोमय्या एस.गोन्डा
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
भटकल क्षेत्र केंद्र 25.09.2013



तमिल नाडु के नागपट्टिणम में कृत्रिम भित्ति संरचनाएं परिनियोजन के लिए तैयार



कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारी को मछुआरा समुदाय तक विकीर्ण करता है।